व्याकरण मंजरी

व्याकरण मंजरी

(HINDI)
VYAKARAN MANJARI
Grammar and Composition

Compiled by
Committee appointed by
The University of Kerala

Printed at
Kerala University Press

Published 2003

Price : Rs. 38/-

Published by
Dr. A. Razaludeen
Director
Dept. of Publications
for the University of Kerala
Thiruvananthapuram
KUDP/S.No-3/TB(D.L)H-Ed.I/03

व्याकरण मंजरी

(डिग्री के लिए)

प्रकाशन विभाग
केरल विश्व विद्यालय
तिरुवनन्तपुरम
2003

प्रस्तावना

प्रस्तुत पुस्तक डिग्री के उन छात्रों के लिए तैयार की गयी है जिन्होंने द्वितीय भाषा के रूप में हिन्दी ली है। भाषा-विज्ञान, शैली विज्ञान, शिक्षण शास्त्र आदि क्षेत्रों में जो नयी प्रवृत्तियाँ उभर आयी हैं उनका प्रभाव व्याकरण पर भी अवश्य पडा है। नये परिप्रेक्ष्य में व्याकरण को भी देखने का प्रयास हुआ है । अनेक भागों में मतभेद की संभावना भी बढ गयी है।

डिग्री के छात्रों को व्याकरण सिखाने का उद्देश्य उन्हें शुद्ध भाषा में भावों को प्रकट करने का अभ्यास देना है। इस लक्ष्य को दृष्टि में रखकर यह पुस्तक तैयार की गयी है। इस पुस्तक में सरल भाषा में व्याकरण के सामान्य नियमों को समझाने का प्रयास ही किया गया है। अभ्यास केलिए अनेक प्रश्न दिये गये हैं जिनके उत्तर लिखने और समझाने में अध्यापक छात्रों को मार्ग - निर्देश दे सकते हैं।

परिभाषा की सीमाओं से हम परिचित हैं। इसलिए उदाहरणों से स्वरूप समझाने का सरल मार्ग हमने स्वीकार किया है। हिन्दी भाषा में कुछ प्रयोग ऐसे भी हैं जिनका समर्थन नियमों से करना असंभव है। उन्हें केवल उदाहरणों से हमने समझाया है।

अनुवाद और सार-ग्रहण केलिए कुछ अवतरण भी इस पुस्तक में शामिल हैं। आशा है कि सरल और शुद्ध भाषा का प्रयोग सीखने केलिए ये अभ्यास उपयोगी सिद्ध होंगे।

अध्यापकों और विद्यार्थियों के सुझावों का हम हार्दिक स्वागत करेंगे।

अध्यक्षा, अध्ययन समिति

विषय सूची

व्याकरण

सार ग्रहण

निबन्ध

अनुवाद

पाठ १

शब्दों के भेद

PARTS OF SPEECH

ध्वनियों का सार्थक समूह शब्द (Word) है। अंग्रेजी में शब्दों के आठ भेद माने गये हैं। हिन्दी में भी शब्दों के आठ भेद मानते हैं।

संज्ञा	Noun	क्रिया विशेषण	Adverb
सर्वनाम	Pronoun	संबन्ध बोधक	Preposition (Post position)
विशेषण	Adjective	समुच्चय बोधक	Conjunction
क्रिया	Verb	विस्मयादि बोधक	Interjection

लिंग (Gender), वचन (Number), कारण (Case), पुरुष (Person), काल (Tense) आदि व्याकरणिक तत्व हैं। इन व्याकरणिक तत्वों के कारण भाषा में प्रयुक्त शब्दों में रुपान्तर होता है। कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं, जिनपर इन व्याकरणिक तत्वों का कोई प्रभाव नहीं पडता, उनमें रूपान्तर नहीं होता।

लिंग, वचन, पुरुष आदि के कारण जिन शब्दों में रूपान्तर होता है, उन्हें विकारी शब्द (Declinables) कहते हैं। लड़का, लड़के, लड़की, लड़कियाँ, लड़के को, लड़कों को, वह, उसका, उससे, बडा, बडे, बडी, आदि इसके उदाहरण हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया विकारी शब्द हैं।

लिंग, वचन, पुरुष आदि के कारण जिन शब्दों में रूपान्तर नहीं होता, उन्हें अविकारी शब्द (indeclinables) कहते हैं। लड़का जल्दी खाता है, लड़की जल्दी खाती है, लड़के जल्दी खाते है। राम या कृष्ण। सीता या राधा। अधोरेखांकित शब्द अविकारी शब्द हैं। क्रिया विशेषण, संबन्ध बोधक, समुच्चय बोधक (योजक) और विस्मयादिबोधक (धोतक) अविकारी शब्दों के वर्ग में आते हैं।

१. **संज्ञा** नाम होता है। व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव का नाम संज्ञा है।

उदा : राजू, जोसफ़, लता, पहाड़, जानवर, लज्जा, क्रोध

२. **सर्वनाम** हर नाम का प्रतिनिधि होता है। किसी भी संज्ञा के स्थान पर उसके अर्थ को सूचित करने केलिए प्रयुक्त होता है।

उदा : मैं, हम, तू, तुम, वह, वे, सो, कुछ

३. **विशेषण** संज्ञा की विशेषता को व्यक्त करता है। यह कभी संख्या और परिमाण को भी सूचित करता है।

उदा : अच्छा, बुरा, मोटा, पतला, पाँच, लड्के, पाँच सेर, चावल

४. **क्रिया** किसी व्यापार (Action) का होना या करना सूचित करता है। फूल खिलता है, हवा चलती है, धूप फैलती है आदि वाक्यों में अपने आप होने वाले व्यापार सूचित हैं। लड़का पढता हैं, बच्चा खेलेगा, ललिता दूध लाती है आदि में किसी के द्वारा किये जानेवाले व्यापार सूचित होते हैं।

५. **क्रिया विशेषण** क्रिया के द्वारा सूचित व्यापार के काल, स्थान, परिमाण या रीति को व्यक्त करता है, अर्थात् क्रिया की विशेषता

को व्यक्त करता है।

उदा : जल्दी, धीरे-धीरे, तेज, नहीं।

६. **संबन्ध बोधक** किसी संज्ञा या सर्वनाम का वाक्य के दूसरे शब्दों से संबन्ध को व्यक्त करता है।

उदा : मन्दिर के पीछे, महल की ओर।

७. **समुच्चय बोधक** शब्दों, वाक्यांशों या उपवाक्यों को जोड़ने का काम करता है।

उदा : और, या, लेकिन, इसलिए, कि, ताकि

८. **विस्मयादिबोधक** विस्मय, हर्ष, शोक, आदि मनोभावें को व्यक्त करता है।

उदा : वाह! शाबाश! हाय रे! बाप रे! शिव शिव!

पाठ २

संज्ञा

NOUN

'संज्ञा' का अर्थ है नाम। किसी व्यक्ति, वस्तु, स्थान या भाव का नाम सूचित करनेवाला विकारी शब्द संज्ञा है।

राजू, जोसफ़, हमीदा, हिमालय, गंगा आदि किसी विशेष व्यक्ति या वस्तु के नाम होते हैं। ये व्यक्तिवाचक संज्ञाएँ (Proper Nouns) हैं।

मनुष्य, जानवर, नगर, पहाड़, नदी आदि जाति नाम हैं, इन्हें जातिवाचक संज्ञा (Common Nouns) कहेंगे।

हर्ष, शोक, भय, गरमी, सुन्दरता, मनुष्यता, पढ़ाई, लिखावट आदि व्यक्ति, वस्तु आदि के गुण, धर्म या भाव होते हैं। ये भाववाचक संज्ञाएँ (Abstract Nouns) कहलाते हैं।

हर्ष, शोक आदि मानव मनोभावों के नामों के अलावा कुछ अन्य भाववाचक संज्ञाएँ होती हैं। जातिवाचक संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के साथ प्रत्यय जोड़कर ये संज्ञाएँ बनायी जाति हैं।

१. जातिवाचक संज्ञा से

मनुष्य	-	मनुष्यता, मनुष्यत्व	चोर	-	चोरी
मानव	-	मानवता	पंडित	-	पांडित्य
जानवर	-	जानवरपन	इनसान	-	इनसानियत

लड़का	- लड़कपन	दास	- दासता
बच्चा	- बचपन	नारी	- नारीत्व
बूढा	- बुढापा	मित्र	- मित्रता

२. सर्वनाम से

अपना	- अपनापा	निज	- निजत्व
मम	- ममता	स्व	- स्वत्व

३. विशेषण से

गरम	- गरमी	सुन्दर	- सुन्दरता, सौन्दर्य
ठंडा	- ठंडक	लाल	- लालिमा
लंबा	- लंबाई	काला	- कालापन, कालिमा
चौडा	- चौडाई	पीला	- पीलापन
बडा	- बड़प्पन	अमर	- अमरत्व, अमरता
छोटा	- छुटपन	उचित	- औचित्य
सादा	- सादगी	हरा	- हरापन, हरियाली
एक	- एकता	धीर	- धीरता, धैर्य

४. क्रिया से

चढ़ना	- चढ़ाई	लिखना	- लिखावट, लिखाई
पढ़ना	- पढ़ाई	घबराना	- घबराहट
चलना	- चाल	उड्ना	- उडान
नाचना	- नाच	कमाना	- कमाई
दौड़ना	- दौड	चुनना	- चुनाव
लड़ना	- लडाई	सजाना	- सजावट

हँसना - हँसी
मुसकाना - मुसकान
थकना - थकावट
बहना - बहाव

अभ्यास

निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञाएँ बनाइये :

अच्छा, अधिक, अवश्यक, ईमानदार, उपस्थित, ऊँचा, कड़वा, कठोर, कुशल, खट्टा, खुश, गरम, गरीब, गंभीर, गुरु, चतुर, चालाक, चिकना, लंबा, सरल, सादा, जड़, ठाकुर, ढीठ, तीव्र, नीच, दुष्ट, धोखेबाज , दीन, नेक, परिवर्तन, पंडित, पागल, प्राचीन, बहुत, बुरा, बेवफ़ा, बेईमान, बूढा, भला, मधुर, मीठा, मर्द, मोटा, लधु, ललित, लाल, विधवा, शिष्ट, स्वस्थ, हार्दिक, समृद्ध, सफ़ेद, पीला, बहादुर, काला, गहरा, चोर, महान, एतिहासिक, बीमार, गंदा, अकेला, गुलाम, जवान, माफ, शीघ्र, युवक, लाल, उतरना, चढना, उड़ना, काटना, घटना, बढ़ना, घंबड़ाना, घेरना, पीटना, मिलना, रुकना, चिल्लाना, रोना, हँसना, चुनना, जोतना, धोना, मुसकाना, लड़ना, पढना, लिखना, लेना, देना, सजाना, सींचना, थकना, जगमगाना, होशियार, साफ़, जलना।

पाठ ३

लिंग और वचन

GENDER AND NUMBER

लिंग और वचन दो व्याकरणिक तत्व हैं। हिन्दी में ये दोनों साथ-साथ चलते हैं।

यह छोटा लड़का पढ़ता है।

ये छोटे लड़के पढ़ते हैं।

यह छोटी लड़की पढ़ती है।

ऊपर के तीन वाक्यों में जो आ-ए-ई हैं, लिंग-वचन को सूचित करते हैं। 'आ' पुल्लिंग होने के साथ-साथ एकवचन भी हैं। 'ए' पुल्लिंग बहुवचन है और 'ई' स्त्रीलिंग एकवचन और बहुवचन है। अतःलिंग और वचन को एक साथ देखना अच्छा होगा।

२. लिंग

संस्कृत में तीन लिंगों की व्यवस्था है। पुल्लिंग, स्त्रीलिंग और नपुंसक लिंग। हिन्दी में नपुंसक लिंग (neuter gender) नहीं होता। अतः अप्राणिवाचक (inanimate) शब्दों को पुल्लिंग या स्त्रीलिंग के अन्दर मानना होता है।

संज्ञाओं के लिंग-निर्णय केलिए कुछ निश्चित नियम नहीं हैं। पुरुषवाची शब्द पुल्लिग् हैं, स्त्रीवाची शब्द स्त्रीलिंग। अप्राणिवाचक शब्द कभी अर्थ के अनुसार और कभी रूप के अनुसार पुल्लिंग या स्त्रीलिंग होते हैं।

१. अर्थ पर आधारित लिंग-व्यवस्था

अ. निम्न-लिखित शब्द पुल्लिंग होते हैं -

पहाडों के नाम	-	हिमालय, आल्प्स
ग्रहों के नाम	-	मंगल, गुरु, शनि, अपवाद : पृथ्वी
महीनों के नाम	-	अशिवन, कार्तिक, जेठ
वारों के नाम	-	सोमवार, बुधवार
धातुओं के नाम	-	सोना, लोहा, पीतल अपवाद : चांदी
वृक्षों के नाम	-	आम, कटहल, नारियल अपवाद : नीम, इमली
रत्नों के नाम	-	मोती, हीरा
अनाजों के नाम	-	चावल, गेहूँ, उड़द आदि अपवाद : मूँग, अरहर

आ. निम्न-लिखित शब्द स्त्रीलिंग होते हैं।

भाषाओं के नाम	-	पंजाबी, गुजराती, तेलुगु
नक्षत्रों के नाम	-	रोहिनी, रेवती
तिथियों के नाम	-	तृतीया, षष्ठी
नदियों के नाम	-	सिन्धु, गंगा, कावेरी

२. रूप पर आधारित लिंग व्यवस्था

अ. निम्न लिखित प्रकार के शब्द पुल्लिंग होते हैं।

१. हिन्दी के आकारान्त शब्द - चरखा, लोटा, कमरा

२. त्व, पा, पल में अन्त, होनेवाली भाववाचक संज्ञाएँ - मनुष्यत्व, बुढ़ापा, बचपन

आ. निम्न लिखित प्रकार के शब्द स्त्रीलिंग होते हैं।

१. हिन्दी के ईकारान्त शब्द	-	रोटी, धोती
२. संस्कृत के आकारान्त शब्द	-	भाषा, माला, लता
३. अधिकतर तकारान्त और सकारान्त शब्द	-	बात, रात, साँस। इस नियम के कुछ अपवाद भी हैं।
४. ता, हट, वट, में, अन्त होनेवाली भाव वाचक संज्ञाएँ	-	मनुष्यता, घबराहट, चिल्लाहट लिखावट

भाषा व्यवहार में कुछ पुल्लिग शब्दों का स्त्रीलिंग रुप और स्त्रीलिंग शब्दों का पुल्लिग रुप भी बनाना पडता हे।

३. पुल्लिग शब्दों का स्त्रीलिंग रुप

पुल्लिग शब्दों के स्त्रीलिंग रुप तीन प्रकार से बनते है :-

१. स्त्री प्रत्यय शब्द जोड़कर
२. जाति सूचक शब्द लगाकर
३. भिन्न शब्दों का प्रयोग करके

१. स्त्री - प्रत्यय

अ. 'ई' प्रत्यय

देव	-	देवी	बकरा	-	बकरी
हरिण	-	हरिणी	दादा	-	दादी

आ. 'इन' प्रत्यय

सुनार	-	सुनारिन	चमार	-	चमारिन
लुहार	-	लुहारिन	जुलाहा	-	जुलाहिन
तेली	-	तेलिन	धोबी	-	धोबिन

इ. 'आनी' प्रत्यय

जेट	-	जेठानी	सेट	-	सेठानी
देवर	-	देवरानी	नौकर	-	नौकरानी

ई. 'आइन' प्रत्यय

ठाकुर	-	ठकुराइन	पांडे	-	पंडाइन
लाला	-	ललाइन	चौधरी	-	चौधराइन

उ. 'नी' प्रत्यय

शेर	-	शेरनी	हाथी	-	हथिनी
मोर	-	मोरनी	बाघ	-	बघिनी

ऊ. 'इया' प्रत्यय

कुत्ता	-	कुतिया	बन्दर	-	बन्दरिया
चूहा	-	चुहिया	डिब्बा	-	डिबिया
लोटा	-	लुटिया	खाट	-	खटिया

२. जाति सूचक शब्द

नर कौआ	-	मादा कौआ
नर भेडिया	-	मादा भेडिया
पुरुष सदस्य	-	स्त्री सदस्य
पुरुष प्रतिनिधि	-	स्त्री प्रतिनिधि

३. अन्य शब्द

पुरुष	-	स्त्री	पिता	-	माता
बैल	-	गाय	बादशाह	-	बेगम
वर	-	वधु	भाई	-	बहन

नोट : संस्कृत शब्दों के साथ संस्कृत के स्त्री प्रत्यय लगाते हैं।

अध्यापक	-	अध्यापिका	सम्राट	-	सम्राज़ी
गायक	-	गायिका	विद्वान	-	विदुषी
कवि	-	कवयित्री	स्वामी	-	स्वामिनी

४. स्त्रीलिंग शब्दों का पुल्लिग रूप

बिल्ली	-	बिलाव	बहन	-	बहनोई
भैंस	-	भैंसा	ननद	-	ननदोई
भेड	-	भेडा	रस्सी	-	रस्सा

२. वचन

संस्कृत में तीन वचनों की व्यवस्था है:- एक वचन, द्विवचन और बहुवचन। हिन्दी में दो वचन माने जाते हैं:- एकवचन और बहुवचन। वचन भी व्याकरणिक तत्व है। इसके कारण संज्ञाओं का रुपान्तर होता है।

क. पुल्लिग शब्द

१. आकारान्त पुल्लिंग शब्द बहुवचन में एकारान्त बनते हैं।

कमरा	-	कमरे	घोड़ा	-	घोड़े
कपडा	-	कपडे	गधा	-	गधे
चरखा	-	चरखे	लड़का	-	लड़के

लेकिन दादा, नाना, मामा, चाचा, राजा, चन्द्रमा ये शब्द बहुवचन में एकारान्त नहीं बनते। बहुवचन में इनका वही रुप होता है; या 'लोग' 'गण' आदि जोड लेते हैं - जैसे 'राजा लोग', नेता गण, आदि।

२. आकारान्त को छोड अन्य पुल्लिग शब्दों का बहुवचन में कोई रुपान्तर नहीं होता।

घर	-	पाँच घर	बडा घर	-	बडे घर
फल	-	तीन फल	मीठा फल	-	मीठे फल
हाथी	-	दो हाथी	मोटा हाथी	-	मोटे हाथी
डाकू	-	चार डाकू			

ख. स्त्रीलिंग शब्द

१. अकारान्त आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के साथ बहुवचन में 'एँ' या 'यें' लगता हैं।

बात	-	बातें।	लता	-	लतायें।
आँख	-	आँखें।	माला	-	मालायें।
पुस्तक	-	पुस्तकें।	कथा	-	कथायें।

२. इकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के साथ 'याँ' लगता हैं। ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के इकारान्त बनाकर 'याँ' लगाते हैं।

तिथि	-	तिथियाँ	नदी	-	नदियाँ
नीति	-	नीतियाँ	टोपी	-	टोपियाँ

३. 'या' में अन्त होनेवाले शब्दों के ऊपर चन्द्रबिन्दी लगाते हैं।

डिबिया	-	डिबियाँ	चिड़िया	-	चिड़ियाँ

४. उकारान्त ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के साथ बहुवचन में 'यें' लगता हैं।

वस्तु	-	वस्तुयें।	बहू	-	बहुयें।

विशेष टिप्पणी

हिन्दी में कुछ शब्द एसे हैं जिनका प्रयोग पुल्लिग बहुवचन में होता हैं।

उदा : प्राण, दर्शन, ओठ, हस्ताक्षर, होश, आँसू

उनके प्राण चले गये।

देवी के दर्शन मिले।

ओंट खुले।

अफसर ने ओदश पर हस्ताक्षर किए।

लडकी को होश आये।

आँसू टपकते रहे।

अप्राणिवाचक शब्दों का लिंग निर्णय कठिन हैं। एक ही वस्तु को सूचित करनेवाले दो शब्दों में एक पुल्लिंग और दूसरा स्त्रीलिंग हो सकता है। एसे कुछ सामान्य शब्द नीचे दिये जा रहे हैं।

पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
चित्र	तस्वीर	विवाह	शादी
पक्षी	चिड़िया	धैर्य, साहस	हिम्मत
शरीर, तन	देह	यंत्र	मशीन
पत्र, खत	चिट्ठी	गांभीर्य	गंभीरता
हुकुम, आदेश	आज्ञा	विद्यालय	पाठशाला
धन	दौलत	मीन	मछली
न्यायालय	अदालत	जीवन	जिंदगी
प्रकाश, उजाला	रोशनी	नयन, नेत्र	आँख
अनुरोध	प्रार्थना	समाचार	खबर
रोग	बीमारी	वक्ष	छाती
संसार	दुनिया	देहांत, निधन	मृत्यु
इम्तहान	परीक्षा	रूप	सूरत
रास्ता, मार्ग	राह	इन्तजार	प्रतीक्षा

अभ्यास

लिंग बदलिए :-

घोडा, बिल्ली, दास, साला, नाना, बकरा, पुत्र, बंदर, कुत्ता, अहीर, धोबी, लुहार, जुलाहा, सर्प, ग्वाला, कहार, चमार, बाघ, ऊँट, हाथी, मोर, भील, बाबू, ठाकुर, देवर, नौकर, भैंस, विद्वान, ब्राह्मण,

इन्द्र, बाप, स्वामी, पंडित, क्षत्रिय, माली, मालिक, लेखक, नायक, निर्देशक, अध्यापक, मुर्गा, साहब, हंस, औरत, ससुर, वर, दुलहा, गाय, पुरुष, दाता, अभिनेता, भाई, युवक, शिष्य, बादशाह, सेवक, सम्राट, श्रीमान्, सन्यासी, हिरण, कवि, छोटा लड़का, प्यारी बहन, गोरा युवक, बाबू।

वचन बदलिए :-

कविता, घोडा, चूड़ी, पत्ता, फ़िल्म, देवता, उल्लू, नेता, पेड़, पंक्ति, घाव, मक्खी, आँख, सिपाही, सड़क, गुरु, ज़मीन, कुर्सी, पाठशाला, वृक्ष, सूचना, समाचार, चीज़, साधु, खबर, डाकू, पशु, मोती, कवि, माली, पक्षी, भाई, पहाड़, वस्तु, सूई, कुआँ, परीक्षा, पत्थर, दवा, वह बडा लड़का, यह अच्छा विद्यार्थी, यह छोटा घर, वह छोटी किताब, वह बडी नदी, इस विद्यार्थी को, किस घर में, उन लड़कियों को, किसी लडकी ने, किस लड़की ने, इसी आदमी ने, उसी फ़िल्म में, विद्यार्थिनी, उस ऊँचे पहाड़पर, उन देशों में, लिखा हुआ पत्र, यह चमकता मोती

निम्नलिखित वाक्यों में अधोरेखांकित शब्दों का बहुवचन में प्रयोग कीजिये:-

१. यह पंक्ति उस पाठ से ली गयी है।
२. मैंने इसी लड़की को कहीं देखा था।
३. नदी पर्वत से निकलती है।
४. किस विद्यार्थिनी को साठ से ज्यादा अंक मिले?
५. इस कुर्सी पर कौन बैठेगा?
६. उस मीठे फल का स्वाद बढ़िया है।
७. पक्षी पेड पर बैठा है।

८. किस लड़के ने यह काम किया?

९. वह यहाँ के किसी घर में रहती होगी।

१०. कल जो आया था वह आज फिर आएगा।

११. लताएँ फैल गयी है।

१२. पौधा लगाया गया।

शुद्ध कीजिए :-

१. वह लोग आ गए।

२. सुनिये, मैं तुम्हारी बात मान नहीं सकता।

३. मैं मंदिर जाकर देवी का दर्शन किया।

४. पक्षियाँ उड़ गये।

५. कोई काम में शीघ्रता मत करो?

६. यह किताब का क्या मोल है?

७. यह हमारा कठिन परिश्रम का फल है।

८. बच्चे को मिठाई कैसा लग?

९. एक महीना के अंदर सब चीज सस्ती हो जाएँगी।

१०. सारा विद्यार्थी परीक्षा में पास हो गया।

पाठ ४

कारक

CASE

हिन्दी के विभक्ति प्रत्यय और उनके विशेष प्रयोग

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दों से उसका संबन्ध प्रकट हो, उसे कारक कहते हैं।

गोपाल ने माधव को पैसा दिया।

पंडितजी उसको हिन्दी सिखाते हैं।

ऊपर के उदाहरणों में कारकों को अधोरेखा (Underline) खींचकर दिखाया है। ने, को, से आदि कारक नहीं होते, कारकों को सूचित करनेवाले प्रत्यय या विभक्ति प्रत्यय होते हैं। कभी कभी कारकों को सूचित करनेवाले विभक्ति प्रत्यय होते हैं। कभी कभी कारकों को सूचित करनेवाले विभक्ति प्रत्यय लुप्त रहते हैं।

हिन्दी में आठ कारक मानते हैं। कारकों के नाम, उनको सूचित करनेवाले प्रत्ययों के साथ नीचे दिखाये है।

१. कर्त्ता कारक Nominative case	ने
२. कर्म कारक Accusative case	को
३. करण कारक Instrumental case	से
४. संप्रदान कारक Dative case	को, केलिए
५. अपादान कारक Ablative case	से
६. संबन्ध कारक Possessive case	का, के, की
७. अधिकरण कारक Locative case	में, पर
८. संबोधन कारक Vocative case	हे, अरे !

१. **कर्ता कारक** वाक्य के कर्ता को सूचित करता है। इसका प्रत्यय 'ने' है। सकर्मक क्रिया भूतकाल में प्रयुक्त हो, तभी 'ने' प्रत्यय लगता है। अन्यथा 'ने' का प्रयोग नहीं होता।

रमेश रुपये देता है।

रमेश ने रुपये दिये।

२. कर्म कारक वाक्य के कर्म को सूचित करता है । इसका प्रत्यय 'को' है। कर्म अप्राणिवाचक (Inanimate) हो तो 'को' प्राय : लुप्त रहता है।

राधा सीता को बुलाती है।

राधा रोटी खाती है।

३. **करण कारक** क्रिया के साधन या उपकरण को सूचित करता है। इसका प्रत्यय 'से' है।

लड़का चाकू से आम काटता है।

हम कान से सुनता हैं। (With, by)

४. **संप्रदान कारक** किसी को कुछ देने का भाव हो तो उस संज्ञा को संप्रदान कारक कहते हैं। इसका भी प्रत्यय 'को' है। कभी कभी 'केलिए' प्रत्यय लगता है।

यह पेंसिल सीता को दे। (to)

यह पेंसिल सीता केलिए है। (for)

५. **अपादान कारक** अलग होने, हटने या दूर होने का भाव सूचित होने पर अपादान कारक होता है। इसका प्रत्यय भी 'से' है।

नदी पहाड़ से निकलती है। (From)

राजू रमेश से बडा है। (Than)

६. **संबन्ध कारक** किसी दूसरी संज्ञा से संबन्ध सूचित करनेवाला रूप संबन्ध कारक है। इसके तीन प्रत्यय है - का, के और की। प्रत्यय के

बाद प्रयुक्त संबन्धी संज्ञा के लिंग वचन के अनुसार 'का, के या की' का प्रयोग होता है।

रघु का भाई।

रघु के लड़के।

रघु की बहन।

रघु का भाई + को = रघु के भाई को।

रघु के लड़के + को = रघु के लड़कों को।

७. **अधिकरण कारक** वस्तुओं के आधार को सूचित करनेवाला अधिकरण कारक है। इसके दो प्रत्यय हैं - में, पर।

कलम में स्याही हे।

घडी मेज पर है।

८. **संबोधन कारक** संबोधन में संज्ञा से पहले अरे, हे आदि शब्द लगते हैं।

अरे लड़के! इधर आओ।

हे प्रभो! दया कीजिए।

विभक्ति प्रत्ययों के विशेष प्रयोग

१. को

१. अप्राणिवाचक कर्म के साथ 'को' नहीं लगता।

लड़की दूध लायी।

२. समय सूचित करनेवाले शब्द के साथ 'को' लगता है।

दोपहर को। शाम को।

पाँच तारीख़ को! बुधवार को।

३. कर्त्ता के अनुभवों को (Feelings, experience) सूचित करने केलिए 'को' प्रत्यय का प्रयोग होता है।

मोहन को खुशी हूई।

पिताजी को गुस्सा आया।

बच्चे को भूख लगी।

गोपी को बुखार है।

इमको अच्छा नहीं लगा।

शीला को चोट लगी।

४. किसी स्थान को आने-जाने के अर्थ में 'को' प्रत्यय लुप्त रहता है।

वे बाज़ार जाते हैं। पंडितजी कल मद्रास पहुँचे।

हम मद्रास गये।

५. संप्रदान कारक में 'केलिए' के अर्थ में 'को' का प्रयोग होता है।

लड़के खेलने जा रहे है।

क्या तुम सिनेमा देखने जाओगे?

६. 'चाहिए, होना, पड़ना' के प्रयोग में कर्ता के साथ 'को' लगता है।

उनको अब सोना चाहिए।

हम सब को हिन्दी सीखनी है।

मुझको आज ही जाना पड़ेगा।

II. से (कारण)

१. यात्रा का साधन सूचित करने केलिए 'से' का प्रयोग होता है।

हम अभी अभी रेल गाडी से आये।

वह हवाई जहाज़ से जाएगा।

२. उपकरण सूचित करने : कलम से लिखो।

३. कारण बताने : लोग भूख से पीडित है।
वे भय से त्रस्त हैं।

४. प्रकार बताने : तेज़ी से जाओ। ध्यान से सुनो।

५. 'के साथ' के अर्थ में : मोहन ने राधा से शादी कर ली।

६. कर्मवाच्य में : प्रेमचन्द से यह कहानी लिखी गयी।

से (संप्रदान)

१. अलग होना : पत्ता पेड़ से नीचे गिरा।

२. स्थिति के बदल जाने पर : क्या से क्या हो गया। गरीब से अमीर हो गया।

३. स्रोत बताने : गंगा हिमालय से निकलती है।

४. समय का सिलासिला बताने : पाँच दिनों से बीमार है। दो साल से मद्रास में है। चार घंटे से प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

५. तुलना में : लीला शीला से अधिक सुंदर है।

६. करना, मिलना आदि के प्रयोग में :-

पिताजी से कहो। वह मुझसे नहीं बोलता।
राजू से पूछो। बच्चे हम से प्रेम करते हैं।
ईश्वर से प्रार्थना करना अच्छा है।

तुम उनसे बात करके देखो।

मैं पंडितजी से मिलने जा रहा हूँ।

III. का, के, की

१. संबन्ध कारक में : गोपाल का भाई।

२. मूल्य बताने : पाँच रुपये की किताब। दो लाख का मकान

३. जिससे बना हुआ हो, वह बताने : चाँदी की थाली । चमड़े का जूता।सोने का कंगन। पत्थर का मकान

४. लेखक की सूचना : प्रसाद की कहानी। कालिदास का नाटक

५. उद्देश्य, उपयोगिता : पीने का पानी। पहनने का कपड़ा।

६. भाई-बन्धुओं या शरीर के अवयवों का होना या न होना बताने केलिए 'के' का प्रयोग होता है।

दशरथ के तीन पत्नियाँ थीं।
गोपाल के एक ही बहन थी।
पंडितजी के कोई सन्तान नहीं है।
उसके एक आँख नहीं है।
हमारे तो दोनों पैर हैं।

IV. में

१. समय की अवधि - यह काम दो सालों में पूरा होगा।

२. मूल्य बताने में - यह कपड़ा बीस रुपये में मिला।

३. तुलना - इन फूलों में यह गुलाब ही सुन्दर है।

५. पर

१. निश्चित समय बताने : ठीक समय पर आ जाना।

दो बजकर पैंतीस मिनट पर गाड़ी पहुँची।

२. घटना के क्रम बताने, परिणाम बताने में :

वहाँ जाने पर मालूम हुआ कि.......

रहस्य खुलने पर राजू भाग गया।

३. दया करना, भरोसा करना, विश्वास करना, क्रोध करना आदि में :-

गरीबों पर दया करो।

भगवान पर भरोसा करो।

मुझपर विश्वास क्यों नहीं करते?

मास्टरजी को तुमपर क्रोध हुआ।

कारक-रचना के कारण संज्ञा में रुपान्तर

कारक व्याकरणिक तत्व है। उसके कारण संज्ञाओं में रुपान्तर हो जाता है।

१. आकारान्त पुल्लिग शब्दों के साथ विभक्ति प्रत्यय लगने पर वे एकारान्त हो जाते हैं।

कमरा + में - कमरे में

कपड़ा + से - कपड़े से

२. पुल्लिग हो या स्त्रीलिंग, बहुवचन संज्ञाओं के साथ प्रत्यय लगने पर संज्ञा के अन्त में 'ओं' लगता है।

पाँच घर + में - पाँच घरों में

लड़के + को - लड़कों को

वे आदमी + पर - उन आदमियों पर

बातें + में - बातों में

लतायें + पर - लताओं पर

तिथियाँ + पर - तिथियों पर

नदियाँ + को - नदियों को

अभ्यास

1. Translate into Hindi :-

1. There was nobody in the office
2. My elder brother has one daughter and two sons
3. Why don't you write with your pen?
4. I am buying all these things for my nephew.
6. Who asked you to sit in this chair?
7. The teacher told the boys so many stories.
8. Please don't pluck flowers from these plants.
9. Which story do you like from this book?
10. I started exactly at 10'O clock from my house.

२. उचित विभक्तियों से खाली जगह भरिये :

१. गंगा हिमालय .... निकलकर समुद्र .... पहुँचती हैं।

२. चूहा बिल्ली .... डरता है।

३. लोगों ने राष्ट्रपति .... हार्दिक स्वागत किया।

४. दशरथ .... तीन पत्नियाँ थी।

५. घाडे .... सींग नहीं होती।

६. लक्ष्मण .... विवाह ऊर्मिला .... हुआ।

७. उन्होने मंत्री बनने .... इनकार किया।

८. माँ .... बच्चे .... सुलाया।

९ आगे जाने .... एक कुआँ मिलेगा।

१०. पुलिस ने जुलूस .... आगे बढने .... रोका।

११. मैं माँ .... यह बात कहूँगा।

१२. मैं माँ .... यह बात बताऊँगा।

१३. मास्टर बच्चों .... कहानी सुना रहे हैं।

१४. चिड़ियाँ पेड .... डाल .... बैठी हैं।

१५. वे प्रधानमंत्री .... मिले।

१६. इस विषय .... उनका भाषण अच्छा रहा।

१७. इस महीने .... दस तारीख .... अगली बैठक होगी।

१८. राजा .... धर्म प्रजा .... रक्षा करना है।

१९. गरीबों .... मदद करने .... सरकार ने योजनाएँ बनायी है।

२०. सरकार पुरस्कार देकर कलाकारों .... सम्मान करती हैं।

२१. ईराक .... कूवैत .... आक्रमण किया।

२२. हम ईश्वर .... भरोसा रखते है।

२३. पुराने दिनों .... राजी भी गुरु .... पूजा करते थे।

२४. मैंने सौ रुपये .... एक साड़ी खरीदी।

२५. यह धोने .... पानी हे, पीने .... नहीं।

पाठ ५

सर्वनाम

PRONOUN

सर्वनाम को संस्कृत में 'संज्ञा-प्रतिनिधि कहते हैं। किसी संज्ञा को बार बार दुहराने से बचने केलिए उसके स्थान पर सर्वनाम का प्रयोग किया जाता हे। किसी संज्ञा के स्थान पर उसके अर्थ को प्रकट करने केलिए प्रयुक्त होनेवाला विकारी शब्द सर्वनाम हे।

हिन्दी में सर्वनाम पाँच प्रकार के होते हैं।

	एकवचन	बहुवचन
१. पुरुषवाचक Personal Pronouns		
(१) उत्तम पुरुष I Person	मैं	हम
(२) मध्यम पुरुष II Person	तू	तुम
आदर सूचक Honorific	-	आप
(३) अन्य पुरुष III Person	वह, यह	वे, ये
२. निश्चय वाचक Demonstrative	वह, यह	वे, ये
३. अनिश्चय वाचक Indefinite	कोई, कुछ	कोई, कुछ
४. प्रश्न वाचक Interrogative	कौन, क्या	कौन, क्या
५. संबन्ध वाचक Relative	जो. .... वह	जो......... वे
	जो......... सो	जो......... सो

नोट : वैयाकरण लोग निजवाचक 'आप' को निजवाचक सर्वनाम मानकर

उसे सर्वनामों का छठा भेद कहते हैं। लेकिन निजवाचक 'आप' सर्वनाम नहीं है। वह किसी संज्ञा के स्थान पर नहीं आता, संज्ञा या सर्वनाम के पिछे प्रयुक्त होता है। वह कभी वाक्य का कर्ता नहीं बनता। वह अपना विशेष अर्थ रखता है, 'खुद' या 'स्वयं'। वास्तव में 'आप' सर्वनाम का क्रिया विशेषण के अर्थ में विशेष प्रयोग है।

मैनेजर अपनी गाड़ी आप चलाते हैं। (खुद)
तुम आप कमाओ, आप खाओ। (स्वयं, खुद)
मैं आप चना जाऊंगा। (खुद)

सर्वनाम विकारी शब्द है। सर्वनाम का लिंग नहीं होता, अतः लिंग के अनुसार रुपान्तर नहीं होता। सर्वनामों के एकवचन ओर बहुवचन रुप होते हैं। मैं - हम। वह - वे। यह - ये, आदिं।

सर्वनामों की कारक - रचना

विभक्ति प्रत्ययों के लगने से सर्वनामों में जो रुपान्तर होता हे, संक्षेप में उसकी रुपरेखा दी जाति है।

१. मैं, तू } + को, से, मैं, पर = { मुझको, मुझसे, मुझमें, मुझपर / तुझको, तुझसे, तुझमें, तुझपर

२. मैं, हम, तू, तुम } + का, के, की, केलिए = { मेरा, मेरे, मेरी, मेरे लिए / हमारा, हमारे, हमारी, हमारे लिए / तेरा, तेरे, तेरी, तेरे लिए / तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी, तुम्हारे लिए

३. वह		उसने, उसको ....
यह		इसने, इसको ....
कौन		किसने, किसको ....
जो	+ प्रत्यय =	जिसने, जिसको ....
सो		तिसने, तिसको ....
कोई		किसीने, किसी को ....

४. वे		उनको, उनसे ....
ये		इनको, इनसे ....
कौन	+ प्रत्यय =	किनको, किनसे ....
जो	(except ने)	जिनको, जिनसे ....
सो		तिन को, तिन से ....
कोई		किन्हीं को, किन्हीं से ....

५. वे		उन्होंने
ये		इन्होंने
कौन	+ ने =	किन्होंने
जो		जिन्होंने
सो		तिन्होंने

६. 'सर्वनाम + को' के दो-दो रूप होते हैं।

मुझको, मुझे	हमको, हमें
तुझको, तुझे	तुम को, तुम्हें
उसको, उसे	उनको, उन्हें
किसको, इसे	इनको, इन्हें
किसको, किसे	किनको, किन्हें

जिसको, जिसे	जिनको, जिन्हें
तिसको, तिसे	तिनको, तिन्हें

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों में सर्वनाम - सम्बन्धी अशुद्धियाँ हैं। उन्हें शुद्ध करके लिखिए :-

१. आपकी बात मुझे समझ में नहीं आती।

२. वह लोग आ गए।

३. सुनिए तुम्हारी बात मैं कैसे मानूँ?

४. देखो, आप यह क्या कर रहे हैं?

५. यह सब घर किसके हैं?

६. मैं मेरे घर जा रहा हूँ।

७. ईश्वर! तुम ही मेरी रक्षा कर।

८. आपने जो पुस्तकें भेजी थी वह कल मिल गयी।

पाठ ६

विशेषण

ADJECTIVE

विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता करता है।

जिस संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट होती हे उसे विशेष्य कहते हैं।

उदा : 'गरम पानी', 'बीमार बच्चा'

इनमें 'गरम' और 'बीमार' विशेषण हैं तथा 'पानी' और 'बच्चा' विशेष्य।

सौ रूपये, थोडा दूध, कई लोग

कुछ विशेषण गुण या दशा का बोध कराते हैं, कुछ संख्या का और कुछ परिमाण या मात्रा का।

यह लड़का, वह बच्चा, क्या बात, कौन स्त्री, कोई आदमी, कुछ काम, जो विधार्थी

ऊपर के उदाहरणों में भी पहले शब्द विशेषण हैं और दूसरे शब्द विशेष्य। ये सारे विशेषण सर्वनाम हैं। जो सर्वनाम विशेषणों के रूप में प्रयुक्त होते हैं उन्हों सार्वनामिक विशेषण कहते हैं।

विशेषणों के भेद

अर्थ के आधार पर विशेषणों के ये भेद होते हैं।

१. **गुण बोधक** - ये विशेषण गुण याने अवस्था, स्थिति, रंग, स्वाद आदि का बोध कराते हैं।

उदा : अच्छा, गरीब, बूढ़ा, नीचा, मीठा, लाल।

२. **परिमाण बोधक** - दो, दूसरा, दुगुना, दोनों, सैकडों, कुछ, चार-पाँच

४. **सार्वनामिक** - यह, वह, कोई, जो, कौन

विशेषणों की रूप-रचना

आकारान्त विशेषण लिंग, वचन और कारक के अनुसार एकारान्त और ईकारान्त हो जाते हैं।

उदा : अच्छा लड़का (एकवचन) अच्छे लड़के (बहुवचन) अच्छा लड़का (पुल्लिग), अच्छी लड़की (स्त्रीलिंग) अच्छा लड़का + को - अच्छे लड़के को।

सार्वनामिक विशेषणों में भी वचन और कारक के अनुसार रूप-भेद होते हैं।

यह लड़का (एकवचन) ये लड़के (बहुवचन)

यह लड़का + ने - इस लड़के ने

ये लड़के + को - इन लड़कों को

वे लड़कियाँ + को - उन लड़कियों को

कोई पुस्तक + में - किसी पुस्तक में

जो विशेषण आकारान्त नहीं हैं उनमें लिंग, वचन और कारक का प्रभाव नहीं पड़ता।

उदा : गरीब लड़का, गरीब लड़के, गरीब लड़कियों ने, बासी भात, बासी रोटी, ज्यादा लोग, जरा पानी, जरा चीनी।

विशेषणों की रचना (Formation of adjectives)

क. संज्ञाओं से

१. 'इक' प्रत्यय लगाकर - साहित्यिक, मासिक
कभी मूल शब्द में परिवर्तन भी आता है।
साप्ताहिक, धार्मिक, मौलिक, हार्दिक

२. 'ई' प्रत्यय लगाकर - सुखी, पूर्वी, मराठी, धनी, दानी

३. 'ईय' प्रत्यय लगाकर - स्वर्गीय, भारतीय, विभागीय

४. 'ईन' प्रत्यय लगाकर - रंगीन, कुलीन, कालीन

५. 'वान' प्रत्यय लगाकर - धनवान, गुणवान

६. 'शाली' प्रत्यय लगाकर - भाग्यशाली, प्रतिभाशाली

७. 'ईला' प्रत्यय लगाकर - नमकीला, रंगीला, कँटीला, रसीला, खर्चीला

८. 'आ' लगाकर - भूखा, प्यासा, प्यारा

९. 'दार' लगाकर - हवादार, काँटेदार

१०. 'ऊ' लगाकर - बाज़ारु

११. 'नाक' लगाकर - दर्दनाक, खतरनाक, खौफ़नाक

ख. क्रिया से

१. 'अनीय' लगाकर - निंदनीय, प्रशंसनीय

२. 'य' लगाकर - पूज्य, निन्द्य, पाठ्य

३. 'आऊ' लगाकर - कमाऊ, टिकाऊ

४. 'ता' लगाकर - चलता, रोता

५. 'वाला' लगाकर - गानेवाला, दौड़नेवाला

ग. विशेषणों से
पाँचवाँ, सौगुना, घनिष्ट

घ. अव्ययों से - भीतरी, बाहरी

अभ्यास

क. हिन्दी में अनुवाद कीजिये :

1. There are only three small windows in this big room.
2. The Ganges is the holiest river in India.
3. There are hundreds of factories in this big city.
4. All those three girls are studying in the seventh standard.
5. Ramesh is more intelligent than his younger brother.
6. Who will climb this tall tree?
7. I cannot take bath in this cold water.
8. You cannot buy all your books from this small shop
9. Premchand was the most popular storywriter in Hindi.
10. Today the maximum temperature was 36* celsius.

ख. शुद्ध कीजिए :-

१. इस दीवारों पर क्या लिखा है?

२. इस सड़क बहुत चौड़ा है।

३. यह निला साड़ी तुम कहाँ से खरीदा?

४. इस बड़ा-बड़ा मकानों में कौन लहते हैं?

५. यह पंक्तियाँ प्रसाद की कविता में आती हैं।

ग. निम्नलिखित शब्दों के विशेषण रूप निखिए :-

आदि, अंत, अर्थ, अक्ल, अनुशासन, अंग, आकर्षण, इच्छा, उदय, ऋषि, कल्पना, काँटा, ग्रास, ज़हर, पुराण, संप्रदाय, मर्म, रसायन, प्रसंग, चर्चा, अर्जन, अणु, परिवार, वेद, वेतन, सूर्य, संक्षेप, विस्तार, स्त्री, शिक्ष्य, क्षोभ, क्रोध, क्षमा, विषाद, आसन, अभिषेक, अगिन, शर्म, मर्द, ईर्ष्या, अध्यात्म, अनुवाद, इतिहास, खर्च, जंगल, ताप, दिन, दर्शन, पुराण, पृथ्वी, भूत, बुद्धि, भूख, ऋण, आसमान, मर्द, गुलाब, अंश, संदेह, अनुग्रह, संग्रह।

पाठ ७

क्रिया

VERB

१. सीता गयी। (कार्य)

२. सीता ने पत्र लिखा (कार्य)

३. सीता गिर पडी (घटना)

४. सीता घर पर नहीं हैं। (अस्तित्व)

इन वाक्यों में गयी, लिखा, गिर पडी, नहीं हैं क्रियायें हैं। इन क्रियाओं से कार्य, घटना या अस्तित्व का बोध होता है। जिन शब्दों से क्रिया का बोध होता है उन्हें व्याकरण में भी क्रिया कहते हैं।

धातु Root

क्रिया के मूल रुप को धातु (Root) कहते हैं। सुनता, सुनो, सुनूँ, सुनूँगा, सुना था, सुनिये आदि विविध क्रिया-रुप हैं। इनमें 'सुन' ऐसा अंश है जो सम रुपों में मिलता है। वही मूल रुप है। उसीको 'धातु' कहते हैं।

उदा : चल, बैठ, देख, आ

सामान्य रुप Infinitive form

धातु के अन्त में 'ना' जोड़ने से क्रिया का सामान्य रुप होता हे।

उदा : चलना, बैठना, देखना, आना।

क्रिया का यह सामान्य रूप संज्ञा के रूप में भी प्रयुक्त होता है। इसी कारण इसे क्रियार्थक संज्ञा भी कहते हैं। ऐसी संज्ञा केवल पुल्लिंग एकवचन में आती है। पुल्लिंग एकवचन संज्ञाओं की तरह इसकी भी कारक रचना होती है।

उदा : रोज़ उधर जाना अच्छा नहीं है।

टी. वी. देखने से भी हानि होती है।

यहाँ आने का उद्देश्य क्या है।

लड़की देखने में अच्छी लगती है।

प्रेरणार्थतक क्रिया Causative verb

बच्चा दूध पी रहा है।

इस वाक्य की क्रिया 'पी रहा है' हैं। यह क्रिया किसी अन्य की प्रेरणा से सम्पन्न नहीं होती। बच्चा स्वयं दूध पी रहा है। इसलिए 'पी' धातु प्रेरणार्थक नहीं है।

नौकरानी बच्चे को दूध पिला रही है।

इसमें नौकरानी प्रेरणा दे रही रै और बच्चा दूध पी रहा है। इस वाक्य में प्रयुक्त 'पिला' धातु प्रेरणार्थक है। इसमें प्रेरक (प्रेरणा देनेवाला) एक है। इसलिए 'पिला' धातु प्रथम प्रेरणार्थक हैं।

अब तीसरा वाक्य देखिये :-

माँ नौकरानी से बच्चे को दूध पिलवा रही है।

इसमें माँ नौकरानी को प्रेरित करती है तथा नोकरानी बच्चे को। इस प्रकार इसमें दो प्रेरक हैं। 'पिलवा' धातु द्वितीय प्रेरणार्थक है।

मूल अकर्मक धातुओं में 'आ' लगाकर सकर्मक और 'वा' या 'लवा' लगाकर प्रेरणार्थक क्रिया बनाते हैं।

मकान <u>बन</u> रहा है (अकर्मक)

राज मकान <u>बना</u> रहा है (सकर्मक)

मैं राज से मकान <u>बनवा</u> रहा हूँ (प्रेरणार्थक)

कुछ अन्य अकर्मक धातुओं के रूप

गिरना	गिराना	गिरवाना
उठना	उठाना	उठवाना
कटना	काटना	कटवाना
डूबना	डुबाना, डुबोना	डुबवाना
उतरना	उतारना	उतरवाना

सकर्मक धातुओं के रूप

मूल सकर्मक धातुओं में 'आ' लगाकर प्रथम प्रेरणार्थक और 'वा' या 'लवा' लगाकर द्वितीय प्रेरणार्थक क्रियायें बनायी जाती हैं।

लिखना	लिखाना	लिखवाना
देखा	दिखाना	दिखवाना

प्रेरणार्थक रूप बनने की प्रक्रिया में कभी-कभी धातु में भी परिवर्तन आता है।

नाचना	नचाना	नचवाना
सीखना	सिखाना	सिखवाना
नहाना	नहलाना	नहलवाना
रोना	रुलाना	रुलवाना
पीना	पिलाना	पिलवाना
खेलना	खिलाना	खिलवाना

प्रेरणार्थक क्रिया के प्रयोग के उदाहरण

१. शाहजहाँ ने ताजमहल बनवाया।

२. राधा ने कपड़े (नौकरानी से) धुलवाये।

३. मैंने बाल कटवाया।

४. ज़मींदार ने किसानों को पिटवाया।

क्रिया - भेद

क्रियायें मुख्य रूप से दो प्रकार की होती हैं।

१. अकर्मक   २. सकर्मक

१. अकर्मक क्रिया (जिसका कर्म हो)

जो क्रिया कर्म की अपेक्षा नहीं रखती वह अकर्मक क्रिया है। क्रिया से 'क्या' या 'किसे' प्रश्न करने पर यदि उत्तर की संभावना न हो तो उसे अकर्मक समझ सकते हैं।

उदा : बच्चा हँसता है।
लड़की सो रही है।
साहब बैठे हैं।

२. सकर्मक क्रिया (जिसका कर्म हो)

जो क्रिया कर्म की अपेक्षा रखती है वह सकर्मक क्रिया है। क्रिया से 'क्या' या 'किसे' प्रश्न करने पर उत्तर मिले या मिलने की संभावना हो तो वह क्रिया सकर्मक मानी जा सकती है।

उदा : मैं लिख रहा हूँ। क्या? मैं चिट्ठी लिख रहा हूँ।
वे मार रहे हैं। किसे? वे चोर को मार रहे हैं।
बच्चा दूध पिएगा। मैं पुस्तक पढूँगा।

हिन्दी में कुछ क्रियायें अकर्मक और सकर्मक दोनों होती हैं।

उदा: बदलना, खुजलाना, ललचाना, भरना

अकर्मक प्रयोग	सकर्मक प्रयोग
उसका वेष बदला।	उसने अपना वेष बदला।
नदी भर गयी।	नौकरानी घडे में पानी भर रही है।
सिर खुजला रहा है।	मैं सिर खुजला रहा हूँ।
मेरा जी ललचचाता है।	वह साड़ी मुझे ललचा रही है।

हिन्दी में कुछ सकर्मक क्रियाओं का प्रयोग अकर्मक की भाँति होता है।

वे बोले।

तुम क्यों भूलते हो।

मैं नहीं समझी।

पाठ ८

वाच्य

VOICE

वाच्य क्रिया की वह रुप-रचना है जिससे यह जाना जाय कि क्रिया का मुख्य विषय या उद्धेश्य कर्ता है या कर्म या केवल भाव। हिन्दी में तीन वाच्य है : कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाव वाच्य। अंग्रेज़ी में भाववाच्य नहीं है।

१. कर्तृवाच्य Active Voice

पिताजी अखबार पढ रहे हैं।

इस वाक्य की क्रिया का कर्ता 'पिताजी' है। इस वाक्य का मुख्य विषय 'पिताजी' है। अर्थात् कर्ता पर ही बल होता है। इसलिए यह कर्तृवाच्य है।

कर्तृवाच्य की क्रिया अकर्मक या सकर्मक हो सकती है।

बच्चे दौड रहे हैं। (अकर्मक कर्तृवाच्य)

मैं सिनेमा देखूँगा। (सकर्मक कर्तृवाच्य)

२. कर्मवाच्य Passive Voice

यह मूलत : कर्तृवाच्य के वाक्य से ही बनाया जाता है। कर्तृवाच्य में जो शब्द कर्म है उसकी प्रधानता कर्मवाच्य में रहती है।

यह पुस्तक प्रेमचंद से लिखी गयी है।

इस वाक्य में 'पुस्तक' (जो मूल कर्म है) की प्रधानता रहती है।

कर्तृवाच्य का कर्ता कर्मवाच्य में करण होता है। अर्थात् उसके साथ 'से' या 'के द्वारा' लगाया जाता है।

गाड़ी बैलों से खींची जाती है।

अकसर कर्मवाच्य में क्रिया का कर्ता लुप्त रहता है।

उदा : सौ लोग मारे गये।

बम फेंका गया।

लकड़ी काटी गयी।

कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाने के नियम

१. कर्ता के साथ 'से' अथवा 'के द्वारा' लगाया जाता है।

२. क्रिया के सामान्यभूतकालिक रुप के साथ कर्मवाच्य सूचक 'जा' का यथोचित रुप जोड दिया जाता है।

३. यदि कर्म का उल्लेख हो तो उसके अनुसार क्रिया में परिवर्तन होता है।

४. जिस काल में कर्तृवाच्य रहता है उसीमें कर्मवाच्य भी रहता है।

५. कर्म के साथ 'को' विभक्ति प्रत्यय लगाने पर क्रिया पुल्लिंग एकवचन में रहती है।

उदा : लड़कियों को छोड दिया गया।

३. भाववाच्य

इस में न कर्ता की प्रधानता होती है, न कर्म की। केवल भाव की प्रधानता होती है।

यह मूलत : कर्मवाच्य का ही एक भेद हैं। यह अकर्मक क्रियाओं से ही बनता है। इसकी क्रिया सदा पुल्लिंग एकवचन में रहती है।

भाववाच्य का प्रयोग कर्ता की अशक्यता या असमर्थता (unability) दिखाने केलिए निषेधार्थ में ही होता है।

उदा : हमसे इस धूप में चला नहीं जाता।
कैसी गरमी है कि सोया नहीं जाता।
इस छोटी लड़की से कैसे चला जाय ?
मुख्य क्रिया 'जा' हो तो उसका रुप 'जाया' होता है, न कि 'गया'
मुझसे वहाँ इस सनय जाया नहीं जाता।

कर्मवाच्य पर टिप्पणी

भारतीय भाषाओं में ही नहीं, विदेशी भाषाओं में भी कर्मवाच्य की अपेक्षा कर्तृवाच्य ही स्वाभाविक माना जाता है। अनिवार्य संदर्भो में ही कर्मवाच्य का प्रयोग करना चाहिए।

कर्मवाच्य के प्रयोग के कुछ संदर्भ

१. कर्ता ज्ञात न होने पर-
उदा : हजारों रुपये का माल चुराया गया।
सैकड़ों लोग मारे गये।

२. सरकारी सूचनाओं और आदेशों में -
तिरुवनन्तपुरम नगर के निवासियों को सूचना दी जाती है।
नियम भग करनेवालों को दण्ड दिया जाएगा।

३. रिपोर्ट लिखने में -
बजट प्रस्तुत की गयी।
सभा में प्रस्ताव स्वीकार किया गया।

४. वैज्ञानिक विषयों के प्रतिपादन में
प्लास्टिक से कई चीज़ें बनायी जाती है।
उपग्रह भेजा जाएगा।

५. निर्देश या सूझाव देने केलिए -

उदा : भविष्य में ऐसा लिखा न जाय।

आज ही पेश किया जाय।

वाच्य बदलिये :

१. मैं बैठ नहीं सकता।
२. गाड़ी बैलों से खींची जाती है।
३. यह मकान किसने बनाया?
४. किसने यह चिट्ठी भेजी?
५. ये पंक्तियाँ प्रसाद ने लिखी है।
६. हम आज जा नहीं सकते।
७. समारोह का उद्घाटन प्रधान मंत्री ने किया।
८. सरकार द्वारा शिक्षा पर बहुत व्यय किया जाता है।
९. विक्रमादित्य अपराधियों को कठिन दण्ड देते थे।
१०. आखिर वह कमरा मेरे भाई ने खोला।
११. इतनी रकम कौन देगा?
१२. यह सभा किसने बुलायी है?
१३. नगरवासियों से उनका भव्य स्वागत किया गया।
१४. उत्तर के लोग गेहूँ ज्यादा खाते हैं।
१५. किसने ये पौधे यहाँ लगाये?
१६. इस प्रश्न का उत्तर कौन देगा?
१७. मेरी बात का जवाब किसी ने नहीं दिया।
१८. यह कुर्सी यहाँ क्यों रखी है?
१९. यह उपन्यास प्रेमचंद ने लिखा है।
२०. क्या तुम चुप बैठ नहीं सकते?

२१. सरकार ने कैदियों को छोड दिया।

२२. अगला संस्करण एक महीने में प्रकाशित करेंगे।

२३. चौथे टेस्ट मैच का सीधा प्रसारण करेंगे।

२४. फ़ीस देने की अन्तिम तारीख़ की सूचना कल देंगे।

२५. गाँव की लड़की से शहर में रहा नहीं जाएगा।

२६. इस रद्दी पुस्तक केलिए सौ रुपये दिये!

शुद्ध कीजिये :-

१. चोरों को पीटे गये।

२. सीता से इस सड़क पर चली नहीं जाती।

३. हमसे वहाँ गये नहीं जाते।

४. अन्तराष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लेने केलिए बीस लड़कियों को भेजी जायेंगी।

५. बच्चों को मिठाई बाँटे गये।

६. पुलिस गोली चलाया।

७. चार आदमी अन्तरिक्ष में भेजा गया।

८. सीता को बन में छोडी गयी।

पाठ ९

विधि

IMPERATIVE

विधि से आज्ञा, निवेदन आदि का बोध होता हे। इसका प्रयोग मध्यम पुरुष तक सीमित हैं। तू, तुम, आप ये तीनों सर्वनाम ही इस क्रिया-रुप के कर्ता होते हैं।

जब 'तू' का प्रयोग होता है तो क्रिया धातु-रुप में रहती है।

उदा : तूआ। तू मत जा।

जब 'तुम' का प्रयोग होता है तो धातु के साथ 'ओ' लगता है।

तुम आओ।

तुम मत देखो।

'दे' और 'ले' के रुप 'दो' और 'लो' बनते है।

तुम एक रुपया दो।

तुम यह पुस्तक मत लो।

जब 'आप' का प्रयोग होता है तो धातु के साथ 'इये' लगता है।

आप आइये!

आप मत जाइये।

कर, पी, दे और ले क्रमश : कीजिये, पीजिये, दीजिये और लीजिये बनते हैं।

धातुओं में 'ना' जोड़ने से आज्ञार्थ भविष्यकालिक रुप बनता है।

तू जाना। तू मत पढ़ना। तुम पढ़ना।

'तुम जाओ' का प्रयोग तुरन्त करने केलिए और 'तुम जाना' का प्रयोग बाद में करने केलिए होता है।

अधिक आदर दिखाने केलिए 'इये' के साथ 'गा' लगाया जाता है।

आप आइयेगा।

निषेध के लिए 'न' या 'मत' का प्रयोग होता है।

तू घर मत चल।

तुम चाय न पीना।

आप कुछ न कीजिये।

पूर्वकालिक क्रिया

क्रिया से पूर्व होनेवाली क्रिया बताने के लिए इसका प्रयोग होता है। इसके लिए धातु में कर, के, या करके जोड़ा जाता है।

उदा : मैं खाना खाकर आऊँगा।

'कर' धातु के साथ 'के' ही जोड़ा जाता है। मैं यह काम करके आऊँगा।

धातु के साथ 'करके' का प्रयोग ज़ोर देने केलिए होता है। उसे देख करके आना।

कभी-कभी धातु के ज्यों-के-त्यों रूप से भी काम चलता है।

मैं बीमार को देख आया हूँ।

तुम मेरी बात तो सुन जाओ।

वह सारी चीज़े बेच आया है।

पाठ १०

काल

TENSE

क्रिया के व्यापार के समय को काल कहते है। काल तीन माने जाते हैं।

१. वर्तमान   २. भविष्य   ३. भूत

वर्तमान से बीत रहे समय का बोध होता है।

उदा : वह पढ़ता है।

भूत से बीते हुए समय का बोध होता है।

उदा : उसने मिठाई खाई।

भविव्यत्काल से आनेवाले समय का बोध होता है।

उदा : मैं आऊँगा।

१. वर्तमानकाल **Present Tense**

इसके तीन भेद हैं।

१. सामान्य वर्तमान

इससे कार्य के व्यापार का केवल वर्तमान समय में होना पाया जाता है। यह धातु के साथ क्रिया के कर्ता के अनुसार ता, ते, ती जोडने के बाद हूँ, हो, हैं का यथोचित करने से मिलता है।

	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
मैं	पढ़ता हूँ	पढ़ती हूँ

तुम	पढ़ते हो	पढ़ती हो
वह, यह, तू	पढ़ता है	पढ़ती है
वे, ये, आप, हम	पढ़ते हैं	पढ़ती हैं

लड़का पढ़ता है।	The boy reads
लड़की पढ़ती है।	The girl reads
लड़के पढ़ते हैं।	The boys read
लड़कियाँ पढ़ती हैं।	The girls read

क्रिया से पहले 'नहीं' जोडने से निषेधार्थ मिलता है।

वह नहीं जाता है।

'नहीं' जोडने पर अन्त के हूँ, हो, हैं छोडे भी जा सकते हैं।

वह नहीं जाता।

वे नहीं आते।

२. तात्कलिक वर्तमान **Present Continuous**

धातु के साथ कर्ता के अनुसार रहा, रहे जोड़ने के बाद हूँ, हो, है या हैं का यथोचित प्रयोग करने से तात्कालिक वर्तमान मिलता है। इससे यह पता चलता है कि बोलते या लिखते समय भी क्रिया जारी है।

	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
मैं	पढ़ रहा हूँ	पढ़ रही हूँ
तुम	पढ़ रहे हो	पढ़ रही हो
वह, यह, तू	पढ़ रहा है	पढ़ रही है
वे, ये, आप, हम	पढ़ रहे हैं	पढ़ रही हैं

लड़का पढ़ रहा है	The boy is reading
लड़के पढ़ रहे हैं	The boys are reading
लड़की पढ़ रही है।	The girl is reading
लड़कियाँ पढ़ रही हैं।	The girls are reading

३. संदिग्ध वर्तमान

इसमें संदेह की सूचना मिलती हैं। धातु के साथ कर्ता के अनुसार ता, ते, ती लगाकर हूँगा, होंगे या उनके स्त्रीलिंग रूप हूँगी, होगी या होंगी का यथोचितं प्रयोग किया जाता है ।

	पुल्लिग	स्त्रीलिगं
मैं	सुनता हूँगा	सुनती हूँगी
	(ऐसे प्रयोग साधारण नहीं है)	
तुम	सुनते होगे	सुनती होगी
वह, यह, तू	सुनता होगा	सुनती होगी
वे, ये, आप, हम	सुनते होगे	सुनती होंगी

लड़का सुनता होगा	The boy may be listening
लड़के सुनते होंगे	The boys may be listening
लड़की सुनती होगी	The girl may be listening
लडकियाँ सुनती होंगी	The girls may be listening

२. भविष्यत्काल Future Tense

इसके दो मुख्य भेद है

५. **सामान्य भविष्यत् काल** इससे यह प्रकट होता है कि क्रिया सामान्यत: भविष्य में होगी। धातु के साथ ऊँगा, ओगे, एगा, एँगे या उनके स्त्रीलिंग रूप ऊँगी, ओगी, एगी, एँगी लगाकर सामान्य भविष्यत काल बनाया जाता है ।

	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
मैं	पढ़ूँगा	पढ़ूँगी
तुम	पढ़ोगे	पढ़ोगी
वह, यह, तू	पढ़ेगा	पढ़ेगी
वे, ये, आप, हम	पढ़ेंगे	पढ़ेंगी

लड़का पढेगा	The boy will read
लड़के पढ़ेंगे	They boys will read
लड़की पढेगी	The girl will read
लडकियाँ पढेंगी	The girls will read

६. संभाव्य भविष्यत्

इस भविष्यत् काल से अनेक अर्थ सूचित होते हैं । धातुओं के अन्त्य स्वरों में ऊँ, ओ, ए, एँ लगाने से यह काल मिल जाता है । इस काल में लिंग भेद नहीं है ।

मैं आऊँ	मैं पढ़ूँ
तुम आओ	तुम पढ़ो
यह, वह, तू, लडका लडकी आए	पढे
वे, ये, आप, हम, लडके, लडकियाँ आएँ	पढ़ें

संभाव्य भविष्यत् काल से सूचित होनेवाले अर्थ

१. अनुमति	क्या मैं जाऊँ	May I go?
२. आशा	आप सुखी रहें।	May you be happy
३. अनुमान	कदाचित पानी बरसे।	Perhaps it may rain
४. इच्छा	सब धर्मों के लोग शांति से रहें।	May people of all religion live in peace

५. कर्तव्य	हम सब धर्मों का आदर करें।	Let us respect all religions
६. उद्देश्य	तुम अभी पत्र लिखो ताकि दो दिन में उत्तर मिले।	Write a letter today itself so that a reply will reach in two days.
७. आज्ञा	वह आज ही चला जाय।	He may go to day itself
८. संभावना	अगर वह आए तो मैं उससे मिलूँगा ।	If he comes I will meet him

७ भूतकाल **Past Tense**

हिन्दी में भूतकाल की क्रियाओं के प्रयोग में कुछ विशेष नियमों का पालन सावधानी से करना पडता है । क्रिया के सकर्मक या अकर्मक होने के आधार पर 'ने' का प्रयोग, कर्म के अनुसार क्रिया में परिवर्तन आदि नियम कुछ कठिन अवश्य लग सकते हैं । अभ्यास से ही इनका ठीक प्रयोग संभव है ।

धातुओं के भूतकालिक रूप कैसे बनते हैं ?
निम्ननिरिखत उदाहरणों से यह स्पष्ट होगा ।

		पु. ए	पु. ब	स्त्री.ए	स्त्री.ब
१.	बैठ	बैठा	बैठे	बैठी	बैठीं
	देख	देखा	देखे	देखी	देखीं
२.	आ	आया	आये	आयी	आयीं
	ला	लाया	लाये	लायी	लायीं

	खो	खोया	खोये	खोयी	खोयीं
३.	पी	पिया	पिये	पी	पीं
	सी	सिया	सिये	सी	सीं
४.	छु	छुआ	छुए	छुई	छुईं
५.	दे	दिया	दिये	दी	दीं
	ले	लिया	लिये	ली	लीं
६.	कर	किया	किये	की	कीं
	हो	हुआ	हुए	हुई	हुईं
	जा	गया	गये	गई	गईं

८. भूतकाल के छः भेद माने जाते हैं ।

१. सामान्य २. आसन्न ३. पूर्ण ४. संदिग्ध

४. अपूर्ण ५. हेतुहेतुमद्

क्रिया अकर्मक हो तो वर्तमानकाल और भविष्यत काल की तरह भूतकाल में भी कर्ता के लिंग, पुरुष और वचन के अनुसार होती है ।

उदा : मैं आया । मैं आया हूँ । तुमआये थे ।

आप आये होंगे ।

लड़की आयी होगी । लड़के गये होंगे।

यदि क्रिया सकर्मक हो तो सामान्य, आसन्न, पूर्ण तथा संदिग्ध भूतकालों में कर्ता के साथ 'ने' का प्रयोग होता है । सकर्मक क्रिया कर्म के लिंग और वचन के अनुसार होती है ।

लड़के ने	खाना खाया, रोटी खायी
लड़की ने	पत्र पढा, पत्र (बहुवचन) पढ़े
लड़कों ने	चिट्ठी पढ़ी, चिट्ठियाँ पढ़ीं
लड़कियों ने	चिट्ठी पढ़ी, चिट्ठियाँ पढ़ीं

यदि कर्म के साथ 'को' विभक्ति प्रत्यय हो, तो सकर्मक क्रिया केवल पुल्लिंग एकवचन रुप में रहती है ।

उदा : लड़के ने लड़की को देखा ।

लड़कों ने लड़कियों को देखा ।

यदि वाक्य में कर्म लुप्त रहे तो क्रिया पुल्लिंग एकवचन में रहती हैं ।

उदा : मैंने नहीं देखा ।

लड़कियों ने नहीं पढा ।

अध्यापकों ने नहीं पढ़ाया ।

बोल, भूल, ला का प्रयोग अकर्मक क्रिया की तरह होता है ।

उदा वे क्या बोले ?

लड़के पुस्तकें नहीं लाये ।

हम पुस्तक लाना भूले ।

'समझ' क्रिया का भी प्रयोग कभी - कभी अकर्मक क्रिया की तरह होता है ।

क्या तुम समझे ?

९. सामान्य भूतकाल Simple Past

सामान्य भूतकाल से केवल यह सूचित होता है कि क्रिया का व्यापार बोलने या लिखने से पहले संपन्न हूआ ।

अकर्मक

वह कल आया (पुः ए) He Came yesterday

पिताजी (आदरसूचक बहुवचन) नहीं आये। Father did not come

बच्चे रोये (पु. ब) The children cried

लड़की उठी (स्त्री. ए) The girl got up

लड़कियाँ लौट गयीं (स्त्री. ब) The girls returned

सकर्मक 'ने' का नियम लागू होता है ।

लड़की ने एक पत्र लिखा ।	The girl wrote a letter
लड़की ने दो पत्र लिखे ।	The girl wrote two letters
लड़की ने एक चिट्ठी लिखी ।	The girl wrote a letter
लड़की ने दो चिट्ठियाँ लिखीं।	The girl wrote two letters

'पत्र' पुल्लिग शब्द है और 'चिट्ठी' स्त्रीलिंग । चारों वाक्यों में कर्ता 'लड़की' ही है । क्रिया में परिवर्तन कर्म (पत्र एकवचन और बहुवचन, चिट्ठी, चिट्ठियाँ) के अनुसार होता है ।

राम ने सीता को उपवन में देखा ।

इस वाक्य में कर्म 'सीता' है । उसके साथ 'को' विभक्ति प्रत्यय लगा है । इसलिए क्रिया पुल्लिग एकवचन में रहती है ।

अन्य कुछ उदाहरण भी देखिए

लड़की ने दरवाज़ा खोला ।	The girl opened the door
लड़के ने खिड़की खोली ।	The boy opened the window
किसी ने खिड़कियाँ खोलीं।	Somebody opened the windows
लड़की ने सारे दरवाज़े खोले।	The girl opened all the doors

१०. आसन्नभूतकाल **Present Perfect**

यह भूतकाल यह दिखाता है कि कार्य अभी - अभी समाप्त हुआ है । 'ने' का नियम इसमें लागू होता है ।

इसका क्रिया - रूप सामान्य भुतकालिक रूप के साथ हूँ, हो, है, हैं के यथोचित प्रयोग से होता है ।

	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
मैं	आया हूँ	आयी हूँ
तुम	आये हो	आयी हो
वह, यह, तू	आया है	आयी है
वे, ये, आप, हम	आये हैं	आयी हैं

लड़का आया है	The boy has come
लड़के आये हैं	The boys have come
लड़की आयी हैं ।	The girls has come
लडकियाँ आयी हैं ।	The girls have come

सकर्मक

मैंने एक पत्र भेजा है ।	I have sent a letter
मैंने दो पत्र भेजे हैं ।	I have sent two letter
मैंने यह कहानी पढ़ी है ।	I have read this story
मैंने ये कहानियाँ पढ़ी हैं ।	I have read these stories
मैंने उस लड़की को कहीं देखा है।	I have seen her somewhere

इस वाक्य में कर्म 'लड़की' स्त्रीलिंग तो है ही। लेकिन उसके साथ 'को' लगा है। इसी कारण क्रिया पुल्लिग एकवचन में रहती है।

मैंने सुना है।

इस वाक्य में कर्म का उल्लेख नहीं है। इसलिए क्रिया पुल्लिग एकवचन में रहती है।

३. पूर्णभूत Past Perfect

इस भूतकाल से सूचित होता है कि भूतकाल में ही कार्य पूर्ण हो गया था। इसका क्रिया-रुप सामान्यभूतकालिक रुप के साथ था, थे, थीं के यथोचित प्रयोग से होता है। सामान्य भूतकाल के सारे नियम इसमें भी लागू होते हैं।

अकर्मक

मैं गया था।	I had gone
लड़की गयी थी।	The girl had gone
वह पहूँचा था।	He had reached
हम गये थे	We had gone

सकर्मक

मैंने उनका नाटक देखा था।	I had seen his drama
मैंने उनके सारे नाटक देखे थे	I had seen all his dramas
हमने उनकी कहानी पढी थी।	We had read his story
हमने उनकी कहानीयाँ पढी थीं।	We had read his stories
बच्चे ने बिल्ली को पकड लिया था।	The child had caught the cat

४. संदिरध भूतकाल Doubtful Past

यह भूतकाल में संदेह या अनिश्चय दिखाता है। सामान्यभूतकाल के सारे नियम यहाँ भी लागू होते हैं। इसका क्रिया रुप सामान्यभूतकालिक रुप के साथ हूँगा, होगे, होगा, होंगे तथा उनके स्त्रीलिंग रुपों के यथोचित प्रयोग से बनता है ।

अकर्मक

	मैं आया हूँगा ।	मैं आयी हूँगी ।
	तुम आये होगे ।	तुम आयी होगी ।
यह, वह, तू	आया होगा ।	आयी होगी ।
ये, वे, आप, हम	आये हेंगे ।	आयी होंगी ।

सकर्मक

आपने यह उपन्यास (पु. ए) पढ़ा होगा ।

You might have read this novel.

आपने ये नाटक (पु.ब) पढ़े होंगे ।

You might have read these dramas

आपने यह कहानी पढी होगी ।

You might have read this story

आपने ये कहानियाँ पढ़ी होंगी ।

You might have read these stories

५. अपूर्णभूतकाल **Past Imperfect**

अपूर्णभूतकाल में 'ने' का प्रयोग नहीं होता । याने कर्ता के अनुसार ही क्रिया बदलती है । इस काल से यह सूचित होता है कि व्यापार भूतकाल में शुरु हो गया था, मगर उसके खतम का पता नहीं है । कभी इस काल से कार्य करने की आदत या नियमितता की सूचना भी मिलती है । मुख्यक्रिया के वर्तमानकालिक कृदन्त रुप ता, ते, ती के साथ था, थे, थी, थीं का यथोचित प्रयोग करने से इसका क्रिया रुप मिलता है ।

	पुल्लिग	स्त्रीलिंग
मैं, वह, यह, तू	आता था	आती थी
ये, वे, आप, हम, तुम	आते थे	आती थीं

वे घर से दूर रहते थे ।

They were living away from the house

वह लड़की किसी दफ़तर में काम करती थी ।

That girl was working in some office

६. हेतू हेतुमद् भूत Conditional Part Tense

इससे सूचित होता है कि क्रिया भूतकाल में होनेवाली थी पर किसी कारण हो न सकी । धातु के साथ ता, ते, ती के यथोचित प्रयोग से इसका क्रिया - रूप मिल जाता हे ।

यदि मैं यहाँ होता तो तुम न जाते ।

If I were here you would not have gone.

यदि तुम चिट्ठी लिखते तो मैं स्टेशन आ जाता ।

Had you written a letter I would have come to the station

यदि वर्षा होती तो खेती सूख न जाती ।

मेरे पास कलम होती तो अभी हस्ताक्षर कर देता । यदि वे कहानियाँ लिखते तो बहुत अच्छा होता ।

उनकी मृत्यु न होती तो वे अवश्य मंत्री बनते ।

विशेष टिप्पणी

केवल क्रिया - रूप को देखकर काल निर्धारित करने में भूल हो सकती है । अनेक क्रिया रूप - ऐसे भी है जो एक से अधिक कालों को सूचित करते हैं ।

उदा : १) लड़का लड़की से बातें कर रहा है (तात्कालकि वर्तमान)

मैं कल शहर जा रहा हूँ (भविष्यत्)

२) वह आया (भूत)

मैं अभी आयी । (वर्तमान या भविष्य)

३) Two birds were sitting on the branch of a tree

पेड की डाल पर दो पक्षी बैठे थे।

Translate into Hindi

1) Nobody came for the meeting
2) The president spoke for half an hour
3) Premchand has written about three hundred short stories in Hindi.
4) They might have left the city and gone to the village
5) After the Kalinga war Asoka stopped fighting for ever.
6) Why have you brought all these clothes?
7) Having reached Madras we decided to go to Bangalore.
8) Do you know that I had sent five letters to you
9) If I were in your place, I would never have let this happen
10) People of all religions have been living as brothers in this country
11) On the Republic Day, the Government of Kerala released thirty three prisoners
12) The President might have signed the order
13) The minister took oath in the name of God
14) He is roaming in his garden with his dog.
15) If he calls me I will certainly go
16) I had kept all my books in his room
17) The Prime Minister will inaugurate the new building in the college
18) He was received at the Palam airport by the President of India
19) The third and final match will be played in the first week of next month
20) The people of Kerala celebrate Onam in the month of August
21) Do you want me to starve and die?
22) Come, dear children ! Let us not fight over caste and religion
23) Bapuji was not a mere political leader, he was a social reformer and spiritual teacher
24) Where did you leave her?
25) Come with me. I will show you every room in this house.

शुद्ध कीजिये -

१) तुम इन थालियों को क्यों साफ़ नहीं की ?

२) मैं सारी किताबों पढ लिया है ।

३) किसने यह घडी खरीद लाया ?

४) इन लड़कियों को कौन पीटी ?

५) उन्होंने किताबों को फाड ड़ाले ।

६) लड़की सब गहने उतार फेंका ।

७) मैं उस काम किया ।

८) लड़का बात कहा ।

९) वे दो किताब लिखा है ।

१०) वे पाँचवाँ अध्याय में यह बात लिखा है ।

११) मैं सब बातें जान लिया ।

१२) वह मुझे देखकर गाडी रोका ।

१३) कोई अपनी पुस्तक यहाँ छोडा है ।

१४) तुम किसे बुलाये ?

१५) शिकारी सब पक्षियों को मार डाली ।

१६) वे क्या किये ?

१७) मेरा छोटा भाई एक नया मकान खरीदा ।

१८) अध्यापक कितना पाठ पढाया ?

१९) यह लडकी शहर में रहना नहीं सीखा ।

२०) तुम ये कपडे कहाँ से खरीदा ?

पाठ ११

क्रिया - विशेषण

ADVERB

क्रिया - विशेषण क्रिया की विशेषता बतानेवाले शब्द हैं । वे क्रिया की रीति, स्थान, काल, परिमाण आदि का बोध कराते हैं ।

वह पहुँच गया। कहाँ ?	वह वहाँ पहुँच गया।
वह पहुँच गया। कब ?	वह कल पहुँच गया।
वह दौड रहा है। कैसे ?	वह तेज़ दौड़ा रहा है।
मैं जानता हूँ। कितना ?	मैं थोडा - थोडा जानता हूँ ।

क्रिया - विशषणों के भेद

अर्थ के अनुसार क्रिया - विशेषण चार प्रकार के है ।

१. कालवाचक	-	आज, अब, पहले
२. स्थानवाचक	-	यहाँ, पास, आगे, पीछे, सामने
३. परिमाणवाचक	-	इतना, थोडा, कूछ
४. रीतिवाचक	-	ऐसे, न, नहीं, मत

न, नहीं, मत का प्रयोग

१. 'मत' केवल विधि में आता है ।

तुम मत जाओ । आप मत देखिये ।

२. 'न' का प्रयोग भी विधि में होता है ।

अब न चल । रोज़ रोज़ सिनेमा न देखना ।

३. सामान्य वर्तमान, तात्कालिक वर्तमान, आसन्न भूत और प्रश्न के

उत्तर में 'नही' का प्रयोग होता है ।

मैं नहीं खाता । हम नहीं जा रहे हैं । उसने कुछ नहीं पढा है ।

क्या, तुमने लड़की को देखा ? नहीं ।

४. अन्य संदर्भों में 'न' और 'नहीं' में विशेष भेद नहीं । लेकिन 'नहीं' के प्रयोग में निषेध की निश्चयता अधिक प्राप्त होती है ।

वह न आया । वह नहीं आया ।

मैं न पढ़ूँगा । मैं नहीं पढ़ूँगा ।

विशेष टिप्पणी

आकारांत विशेषण का प्रयोग जब क्रियाविशेषण के रूप में होता है तो लिंग वचन के अनुसार उसमें परिवर्तन करना ठीक नहीं है।

मोहन अच्छा गाता है ।

माधुरी अच्छा गाती है ।

लडके अच्छा गाते हैं ।

याद रखिये कि विशेषण के रूप में 'अच्छा' विकारी शब्द है । वह पुल्लिंग बहुवचन में 'अच्छे' बन जाता है। और स्त्रीलिंग में 'अच्छी'।

क्रिया - विशेषण के रूप में 'अच्छा' अविकारी है। इस कारण उसमें परिवर्तन करना ठीक नहीं है।

तुम गंदा लिखते हो। वह मीठा बोलती है ।

अभ्यास

क) हिन्दी में अनुवाद कीजिए :

१. Our School is not far away

२. My father has gone somewhere

३. She meets me everyday

४. Why don't you write legibly?

५. Perhaps we will meet you at the station

ख) क्रिया - विशेषणों से खाली जगह भरिये :-

१. तुम .... आओ ।

२. लडके .... बोल रहे हैं ।

३. यह पुस्तक ...... मिलती है ।

४. क्या आप ...... आएँगे ?

५. ज्यों ही हम स्टेशन पहुँचे .....गाड़ी निकल पडी ।

सम्बन्द बोधक

Post - Position

संज्ञा या सर्वनाम का संबंध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ दिखानेवाले शब्दों को सम्बन्ध बोधक कहते हैं ।

उदा : पेड़ के नीचे यात्री बैठे थे ।

गरीब भूख के मारे मर रहे हैं ।

लड़का घर की ओर दौड़ा ।

कुछ सम्बन्ध बोधक अव्यय अकेले आते हैं ।

छत पर चूहे रहते हैं ।

स्कूल तक कैसे जाएँ ?

कुछ अन्य सम्बन्ध बोधक अव्यय किसी और सम्बन्ध बोधक अव्यय के साथ (के, से, की आदि) आते हैं ।

उदा : उसके कारण, मेरी वजह से, शहर के पास, गाँव से दूर, उसकी अपेक्षा, घर की और

मुख्य संम्बन्ध बोधक अव्यय

१.	के पहले, के बाद	काल सूचक
२.	के आगे, के भीतर	स्थान सुचक
३.	की तरफ़, की ओर	दिशासूचक
४.	के द्वारा, के सहारे	साधनसूचक
५.	के कारण, के मारे, की वजह से	कारणवाचक
६.	के निमित्त, के हेतु	निमित्तवाचक

सिवाय, मारे, बिना आदि का प्रयोग कभी संज्ञा के पहले भी होता है । ऐसे प्रयोग से बल (emphasis) दिया जाता है ।

उदा :	मंत्रियों के बिना	बिना मंत्रियों के
	गरीबी के मारे	मारे गरीबी के
	उसके सिवाय	सिवाय उसके

अभ्यास

क) Transiate into Hindi

1. Raise your voice against injustice
2. I don't know anything about him
3. We are going back with our servant
4. Who will do this except you?
5. I cannot live without you

ख) उचित सम्बन्धबोधक अव्ययों से भरिये :-

१. उसके ....धर में कोई नहीं है ।

२. धन की ....धर्म श्रेष्ठ है ।

३. हम डाक ....भेजेंगे ।

४. आप ....विद्वान देश में बहुत कम हैं ।

५. स्कूल के .... एक बड़ी दूकान है ।

समुच्चय बोधक

Conjunction

शब्दों, वाक्यांशों या वाक्यों को जोड़नेवाले शब्दों को समुच्चय बोधक कहते हैं ।

अदा: राम और मोहन आज नहीं आए ।

गाड़ी आयी, लेकिन सीता नहीं पहूँची ।

हमें स्टेशन पहूँचना है क्योंकि हमारे पिताजी आज आनेवाले हैं।

वह आज सबेरे या शाम को पहूँच जाएगा ।

हमें अधिकारों का ही नहीं, किंतु कर्तव्यों क्या भी ध्यान रखना चाहिए ।

कुछ अन्य समुच्चयबोधक

एवं, तथा, अथवा, परन्तु, बल्कि, अतएव, इसलिए, कि, ताकि, यदि.........तो, मानों ।

अभ्यास

क) नीचे लिखे वाक्यों को उचित समुच्चयबोधक अव्ययों से मिलाकर लिखिए :

१. राम वन को गये । वहाँ उन्होंने राक्षसों को मारा ।

२. उसने मुझे बुलाया । मैं नहीं गया ।

३. मेहनत करो । सफलता पाओगे ।

४. अध्यापक क्लास में आए । बच्चे उठ खडे हूए ।

५. आज छुट्टी है । बच्चे बहुत खुश हैं ।

विस्मयादि बोधक
Interjection

हर्ष, शोक, विस्मय, निराशा, घृणा, दर्द आदि भावों को प्रकट करने के लिए हम विशेष शब्दों का प्रयोग करते हैं । हर भाषा में ऐसे शब्द होते है । इनको ही विस्मयादि बोधक कहते हैं । हिन्दी के कुछ ऐसे शब्द नीचे दिये गये है ।

प्रशंसा सूचक	आहा ! वा - वाह !
आश्चर्य सूचक	अरे ! ओह ! क्या ! अच्छा ! ओहो !
शोकसूचक	हाय ! आह !
घृणा सूचक	छि: ! थू ! धिक्कार !
क्रोधसूचक	रे ! अबे !
व्यथा सूचक	हाय रे !
सहानुभूति सूचक	बाप रे बाप ! राम राम !

पाठ १२

संयुक्त क्रियायें

COMPOUND VERBS

जो क्रिया दो या दो से अधिक धातुओं के योग से बनती है उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं । सामान्यतया इनमें पहली क्रिया ही मुख्य होती है । दूसरी क्रिया उसके अर्थ में विशेषता उत्पन्न करती है ।

संयुक्त क्रिया के भेद

१. **आरंभ बोधक** इससे क्रिया के व्यापार के आरंभ होने का बोध होता है। क्रिया के साधारण रूप के अन्त को एकारान्त बनाकर 'लगना' क्रिया के रूप लगाने से यह संयुक्त क्रिया बनती है ।

उदा: मैं पढने लगा ।
लड़की सोने लगी ।
पानी बरसने लगा ।

२. **समाप्तिबोधक** इससे मुख्य क्रिया की पूर्णता व समाप्ति का बोध होता है । धातु में 'चुकना' क्रिया के रूप लगाने से बनती है ।

उदा: मैं पढ चुका ।
क्या तुम गाना सुन चुके ?
लडकी चिट्टी लिख चुकी ।

३. **अनुमतिबोधक** इससे कार्य करने की अनुमति दिये जाने का बोध होता है । क्रिया के साधारण रूप को एकारांत बनाकर 'देना'

क्रिया के रूप लगाने से यह बनती है ।

उदा: मैं तुमको जाने न दूँगा ।

उसने मुझे यहाँ ठहरने दिया ।

४. **शक्तिबोधक** इससे कार्य करने की शक्ति का बोध होता है । यह धातु में 'सकना' क्रिया के रूप लगाने से बनती है। कर्ता निर्विभक्तिक रहता है ।

उदा: मैं हिन्दी पढ सकता हूँ ।

तुम आ सकोगे ?

मैं तैर नहीं सकता ?

५. **इच्छाबोधक** इसमें क्रिया के करने की इच्छा प्रकट होती है। क्रिया के साधारण रूप में चाहना क्रिया के रूप लगाने से यह बनती है ।

उदा: मैं आज ही आना चाहता हूँ ।

हम खेलना चाहते हैं ।

लड़की गाना चाहती है ।

उसने कहानी पढनी चाही ।

६. **नित्यताबोधक** इससे क्रिया के व्यापार की नित्यता का बोध होता है ।

उदा: वह पढ़ता रहता है ।

लड़की पढती रही ।

७. **अभ्यासबोधक** क्रिया के करने के अभ्यास का बोध होता है । क्रिया के सामान्यभूतकाल के पुल्लिंग एकवचन रूप के साथ 'करना' क्रिया के रूप लगाने से यह संयुक्त क्रिया बनती है ।

उदा: वह आया करता है ।

खिलाडी कसरत किया करते है ।

'जाना' जब मुख्य क्रिया बनती है तो रूप जाया करना होता है , 'गया करना' नहीं ।

उदा: वह लडकी रोज़ वहाँ जाया करती थी ।

८. **आवश्यकताबोधक** क्रिया की आवश्यकता व कर्तव्य का बोध होता है । साधारण रूप के साथ 'पडना', 'होना', 'चाहिए' कियाओं को जोड़ने से यह संयुक्त क्रिया बनती है ।

उदा: यह काम मुझे करना पडता है ।

मुझे यह काम करना चाहिए ।

मुझे यह काम करना है ।

९. **आकस्मिकता बोधक** धातु रूप के साथ उठना, बठना, पड़ना, डालना के रूप जोडे जाते हैं।

उदा: वह चिल्ला उठा ।

वह क्या कर बैठा ?

पत्ते गिर पडे ।

उसने कह डाला ।

अभ्यास

हिन्दी में अनुवाद कीजिए :-

1. They could not meet the minister
2. Why do you want to help him ?
3. You must answer all the question
4. I have already met him at his office
5. The poor parents had to sell their land
6. The girl used to bring milk at 6 in the morning
7. We had to walk five kilometers to reach the temple.
8. When they began to work, it started raining

9. Let me finish this book first
10. I have to reach the office at 9.30 in the morning
11. The mother had to sell her ornaments for the education of her children.

ख) उचित संयुक्त क्रियाओं से रिक्त स्थान भरिए :-

१. उसने डूबते को बचा.................।
२. सूखे पत्ते पानी में गिर ....।
३. माल गाड़ी यात्री गाडी से टकरा ....।
४. डाकुओं ने यात्रियों को पकड़ ....।
५. बच्चा ज़ोर से चिल्ला ....।
६. मुझे आज ही वापस जाना ....।
७. माली ने खिले फूल तोड ....।
८. पुलिस की टोपी देखते ही चोर भाग ....।
९. दो-तिन धंटे तक पानी बराबर बरसाता ....।
१०. बच्चे ने गिलास तोड ....।

ग) शुद्ध कीजिए :
१. उसे तैर नहीं सकता ।
२. वह यहाँ का काम छोड़ दिया है ।
३. तुमको वह पुस्तक पढ न पाओगे ।
४. हम देश की सेवा करना चाहिए ।
५. तुम कागज़ पर नाम लिखना होगा ।
६. वह लड़की स्कूल गया करती थी ।
७. वह मुझे देखकर गाड़ी रोकना चाहा ।
८. वह लड़की क्या कर डाली ?
९. तस्वीर गिर पडा ।
१०. हमने यह पुस्तक पढ चुका ।

पाठ १३

उपसर्ग और प्रत्यय

PREFIX AND SUFFIX

उपसर्ग (Prefix)

जो शब्दांश (अक्षर या अक्षर समुह) किसी शब्द के पहले जुड़ते हैं उन्हें उपसर्ग कहते हैं । ये शब्दांश अधिकतर अपने में सार्थक नहीं होते । लेकिन जिस शब्द के साथ ये जुड़ते हैं उसके अर्थ में परिवर्तन लाते हैं ।

उदा : 1. 'ज़ान' शब्द से 'अ' उपसर्ग लगाकर 'अज़ान' शब्द बनाते हैं। ज़ान का विपरीत अर्थवाला शब्द है अज़ान

2. 'गमन' से अनुगमन - अनु उपसर्ग के कारण पीछे अर्थ मिल जाता है।

मुख्य उपसर्ग

उपसर्ग	शब्द	उपसर्ग	शब्द
अ	अदृश्य, अज़ान	प्रति	प्रतिध्वनि
अति	अत्यधिक, अत्युक्ति	सु	सुपुत्र, सुलभ
अनु	अनुचर, अनुगामी	अध :	अध:पतन
अप	अपशकुन, अपशब्द	कु	कुपुत्र
अभि	अभिमुख, अभिवादन	पर	परोपकार, पराधीन

अव	अवनति, अवगुण	पुर्व	पुर्वार्ध
उप	उपमंत्री, उपाध्यक्ष	सत	सज्जन, सत्संग
नि	निगूढ, निडर	सह	सहपाठी, सहचर
परि	परिक्रमा, परिपूर्ण	स्व	स्वदेश, स्वार्थ
प्र	प्रगति	अध	अधमरा, अधजला
		उन	उनचास, उनतीस
		स	सपूत
		सु	सुजान
		कम	कमज़ोर
		खुश	खुशकिस्मत, खुशनसीब
		बद	बदकिस्मत, बदनसीब, बदसूरत
		बे	बेशक, बेचारा, बेघर
		ना	नालायक, नापसंद
		हर	हरेक

प्रत्यय Suffix

प्रत्यय शब्द के अंत में आता है और शब्द के अर्थ में विशेषता या परिवर्तन लाता है ।

उदा : 'सुन्दर' विशेषण शब्द के अंत में 'ता' प्रत्यय लगाने से भाववाचक संज्ञा 'सुन्दरता' मिल जाती है । 'साहित्य' संज्ञा से 'इक' प्रत्यय लगाने से 'साहित्यिक' विशेषण मिल जाता है ।

१. कृत् प्रत्यय ये क्रिया के साथ जुड़ते हैं और कृदंत की रचना करते हैं । कृदंत क्रिया से भिन्न शब्द होते हैं । (संज्ञा, विशेषण आदि)

'गाना' से गानेवाला

'गम' से गमन

२. तद्धित क्रिया को छोड़कर अन्य शब्दों से जुड़ते हैं । इन प्रत्ययों से बने यौगिक शब्दों को तद्धितांत कहते हैं ।

मुख्य प्रत्यय

अन	गमन, बंधन
अना	सूचना
इमा	महिमा, लालिमा, हरीतिमा
त्व	गुरुत्व, बंधुत्व
आनी	भवानी, इंद्राणी
अनीय	निंदनीय, स्मरणीय
आलु	दयालु, कृपालु
आन	उड़ान, मिलान
आवा	बुलावा, चढ़ावा

आवट	थकावट, बनावट, सजावट
आहट	चिल्लाहट, घबराहट
आई	चिकनाई, कठिनाई
ई	चोरी, खेती
एरा	लूटेरा, सँपेरा
इया	कुत्तिया, बंदरिया
नी	ऊँटनी, मोरनी
आनी	नौकरानी, देवरानी
ई	खूनी, गुलाबी
दार	दूकानदार, नातेदार, रिश्तेदार

विविध अभ्यास

निर्देश के अनुसार लिखिए :-

I. निम्नलिखित शब्दों में जो अशुद्धियाँ हैं उन्हें हटाकर शुद्ध रूप लिखिए :-

अनुग्रहीत, परिस्थिती, कवी, वात्मिकी, शताब्दि, उल्कर्ष, प्रदर्शिनी, निशेष, विद्यार्थि, गाँधिजी, पांचवा, दोबारा, दांत, संग्रहीत, कवयित्री, निरपराधी, मंत्रि

II.

१. मैंने इसी लड़की को कहीं देखा था । (अधोरेखांकित अंश का बहुवचन में प्रयोग कीजिए)

२. वे लोग हमको बुला रहे हैं । (संदिग्ध भूतकाल में लिखिए)

३. मैंने चुनाव नहीं जीता । मैं मंत्री नहीं बना । (यदि ....तो का प्रयोग कीजिए)

४. ब्रेचारी लड़कियों को .....। (पीटा गया, पीटी गयी, पीटे गये, पीटी गयी इनमें से शुद्ध प्रयोग चुनकर लिखिए)

५. किस विद्यार्थिनी को साठ प्रतिशत अंक मिले ? (बहुवचन में बदलकर लिखिए)

६. मैं गा नहीं सकती । (भाववाच्य में लिखिए)

७. लड़की के घरवालों ने पूरा दहेज नहीं दिया । ससुराल में उसकी दुर्दशा हूई । (हेतुहेतुमदभूत में लिखिए)

८. मैंने उसे पत्र लिखा । (संभाव्य भविष्यत्काल में लिखिए)

९. इस कुर्सी पर कौन बैठेगा ? (बहुवचन में लिखिए)

१०. किताबें उसके जीवन का सबसे बडा धन था । (शुद्ध कीजिए)

११. आठ उग्रवादियाँ मारे जाने की खबर है । (शुद्ध कीजिए)

१२. एक महीना के अंदर प्रधानमंत्री आने की संभावना है । (शुद्ध कीजिए)

१३. कल दुपहर की सभा में समाचारों के .....गाने और नाटक होंगे। (बिना, सिवा, अलावा इनमें से उचित शब्द का प्रयोग कीजिए)

१४. आपसे हमारा अनुरोध है कि आप हमारा निमंत्रण....... । ('स्वीकार करना' का उचित रुप लिखिये)

१५. उन्हें हमारा पता मालुम है । ('जानना' का प्रयोग कीजिए)

१६. इस रचना में लेखक ने नारियों की समस्याओं पर प्रकाश डाला गया है । (शुद्ध कीजिए)

१७. हमने कल एक नाटक देखा । वह रात को दो बजे तक चला । (मिलाकर लिखिए)

१८. मैं मंदिर जाकर देवी का दर्शन किया । (शुद्ध कीजिए)

१९. उनकी मृत्यु हूई । (देहांत का पयोग कीजिए)

२०. उनका प्राण चला गया । (शुद्ध कीजिए)

२१. यह पुस्तक बढिया है । (बहुवचन का प्रयोग कीजिए)

२२. वनमहोत्सव के दिन जगह जगह पर पौधे लगाते है । (कर्मवाच्य में बतलकर लिखिए)

२३. हम स्कूल गये । हमने प्रदर्शनी देखी । (मिलाकर लिखिए)

२४. उनकी उम्र चालीस वर्ष है । (शुद्ध कीजिए)

२५. मैं यहाँ आकर चार दिन हूए । (शुद्ध कीजिए)

२६. आप आने की उम्मीद नही थी । (शुद्ध कीजिए)

२७. लड़की आपको जाती देखी । (शुद्ध कीजिए)

२८. आप आते ही मैं चला जाऊँगा (शुद्ध कीजिए)

२९. उन्होंने एक नया घर बनवाया । वे उसमें रहने लगे । (मिलाकर लिखिए)

३०. हमने समय पर पहुँच न पाया । (शुद्ध कीजिए)

३१. इन कागज़ों पर लडकी क्या लिख रखी है ? (शुद्ध कीजिए)

३२. वे पुछने पर तुम क्या कहा ? (शुद्ध कीजिए)

३३. मैं उससे नहीं बताया । (शुद्ध कीजिए)

३४. मेरी यही कामना है कि ईश्वर आपका भला ....। ('कर' का उचित रुप रखिए)

३५. उसने मुझसे कुछ रुपये पूछे । (शब्द कीजिए)

३६. अब वे तुमसे मिलने नहीं चाहते । (शुद्ध कीजिए)

३७. अंधेरा छा गया । हम कुछ देख नहीं पाते थे । (मिलाकर लिखिए)

३८. सभा शुरु हुई । प्रदर्शनकारियों आना शुरु किया । (ज्यों ही .....से शुरु कीजिए)

३९. आप मेरे साथ आज चलिए । नहीं तो मैं फिर कभी इस घर में कदम नहीं रखूँगा । (यदि .....तो का प्रयोग कीजिए)

४०. मंत्री का भाषण शुरु हुआ । पानी बरसने लगा । (जब.....से शुरु कीजिए)

४१. लड़कियाँ रोज़ सबेरे मैदान में.............करती थीं । (खेला, खेले, खेली इनमें से उचित शब्द का प्रयोग करें)

४२. बाढ में लोगों की झोंपडियाँ बह गयी । उन लोगों को स्कूलों में

ठहराया गया । (मिलाकर लिखिए)

४३. माली सब पेड को काट डाला । (शुद्ध कीजिए)

४४. हम कोई दिन में तुम्हारे यहाँ आएँगे । (शुद्ध कीजिए)

४५. यहाँ सोये नहीं जाते । (शुद्ध कीजिये)

४६. मुझे गर्म गाय का दूध चाहिए । (शुद्ध कीजिए)

४७. उन्होंने एक फूलों की माला पहनायी (शुद्ध कीजिए)

४८. राधा को घुटनों पर दर्द है (शुद्ध कीजिए)

४९. मैं कहने के अनुसार तुम सारा काम करों । (शुद्ध कीजिए)

संज्ञा रुप लिखिए :-

अच्छा, आवश्यक, उपस्थित, ऊँचा, कडुवा, खुश, ख्यात, गरम, गरीब, गुरु, चिकना, चालाक, दिलचस्प, बूढ़ा, मोटा, मीठा, लाल, महँगा, हीन, ऐतिहासिक, बेवफ़ा, लघु, बेवकूफ़, खट्टा, लडना, सींचना, लिखना, सजाना, लेना, देना, धोना, रोना, जोतना, रुकना, चिल्लाना, पीटना, घेरना, बढ़ना, उड़ना, चढना, उतरना, कमाना, मुसकाना, कृतज़ ।

निम्नलिखित शब्दों के विपरीतार्थक (विलोम) शब्द लिखिए :-

उपकार, सजीव, उच्च, अन्नति, सार्थक, उत्तीर्ण, संपन्न, सपूत, दक्षिण, आय, सुगम, अधिक, जीवन, आयात, सफल, दिन, अंधेरा, संघटन, विरह, काला, रोना, अत्थान, बनना, गरीब, अनुज, दायाँ, सस्ता, आदान, हाज़िर, गरम, अनुकूल, अपना, पुरब, चढना, इहलोक, अन्त, शुरु, जन्म, आस्तिक, सीधा, ह्रस्व, आज़ादी, मुख्य, जड, उत्कृष्ट, स्वस्थ, खास, कृतज़, आवश्यक, सवाल, कनिष्ठ, पसंद, जीत, लघु, खुश, ग्राह्या, क्रय, सौभाग्य, स्थूल, खुशबू, निरक्षर, नेकनामी, ग्रामीण, स्वावलंब, पाप, ज़्यादा, पूर्ववर्ती, अमृत ।

सार ग्रहण

१

'कुरुक्षेत्र' भारत का महत्वपूर्ण तीर्थ क्षेत्र है । यह धर्म, इतिहास और संस्कृति सभी दृष्टियों से महत्वपूर्ण है । 'कुरुक्षेत्र' का नाम लेते ही 'महाभारत युद्ध' और भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को गीता का उपदेश देने की बात याद आ जाती है । 'महाभारत' में लिखा है कि कुरु नाम के राज - ऋषि ने इस को कृषि योग्य बनाया था । उन्हीं के नाम पर इसका नाम 'कुरुक्षेत्र' पड़ा । आजकल 'थानेसर' नगर को ही 'कुरुक्षेत्र' के नाम से पुकारा जाता है । यहीं पर कुरुक्षेत्र विश्व - विद्यालय भी है । 'वायुसर' एक बड़ा तालाब है । आजकल यह कुरुक्षेत्र तीर्थ नाम से प्रसिद्ध है । स्थाणु तीर्थ - इस तालाब के तट पर स्थाणु महादेव का प्रसिद्ध मन्दिर है । महाराज हर्षवर्द्धन ने इन्हीं स्थाणुमहादेव के नाम पर इस नगर का नाम 'स्थणेशवर' रखा था जो बाद में 'थानेसर' बन गया । स्थाणु महादेव का दर्शन करने से ही कुरुक्षेत्र की तीर्थ यात्रा का पुण्य मिलता है । 'ज्योतिसर' (तालाब) के किनारे देवी - देवताओं की अनेक मूर्तियाँ स्थापित हैं । यह गीता ज़ान की ज्योति के प्रकट होने का स्थान है, इसीलिए इसे 'ज्योतिसर' कहते हैं । 'कुरुक्षेत्र' हरियाणा राज्य का ही नहीं, भारत का भी महत्वपूर्ण तीर्थ है ।

१. कुरुक्षेत्र किस दृष्टि से महत्वपूर्ण है ?
   कुरुक्षेत्र धर्म, इतिहास और संस्कृति सभी दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।
२. कुरुक्षेत्र किस बात का स्मरण दिलाता है ?
   कुरुक्षेत्र महाभारत - युद्ध और भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को गीता का उपदेश देने का स्मरण दिलाता है ।
३. कुरुक्षेत्र नाम कैसे पड़ा ?

कुरु नाम के राज - ऋषि ने इस क्षेत्र को कृषि योग्य बनाया था । उन्हीं के नाम पर इसका नाम 'कुरुक्षेत्र' पड़ा ।

४. 'थानेसर' नाम केसे बना ?
स्थाणुतीर्थ के तट पर बसे नगर को स्थाणेस्वर नाम दिया गया जो बाद में 'थानेसर' बना ।

५. इस गद्यांश केलिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए ।

२

पत्र कई प्रकार के होते हैं । मित्रों और सम्बन्धियों को लिखे जानेवाले पारिवारिक पत्र, अधिकारियों को लिखे जानेवाले आधिकारिक पत्र और अपने व्यवसाय या काम - धन्धे के सम्बन्ध में लिखे जानेवाले व्यवसायिक पत्र कहलाते हैं । अगर आप सादे कागज़ पर पत्र लिख रहे हैं तो वह मुड़ातुड़ा तथा मैला नहीं होना चाहिए । उस पर स्याही फैलनी नहीं चाहिए । पत्र में पत्र को पानेवाले का पता विशेष सावधानी से लिखना चाहिए ताकि डाकघर वालों को पता पढ़ने में कठिनाई न हो । पते में सबसे पहले पत्र पानेवाले का नाम, फिर मकान नं, फिर गली और मुहल्ला, उसके बाद नगर का नाम और जिले या प्रदेश का नाम लिखना चाहिए । अंत में 'पिन कोड' अवश्य लिखना चाहिए । इससे पत्र जल्दी पहुँचता है ।

१. पत्र कितने प्रकार के होते हैं, वे कौन से हैं ?
पत्र तिन प्रकार के होते हैं - परिवारिक पत्र, आधिकारिक पत्र और व्यावसायिक पत्र ।

२. पत्र लिखते समय किन बातों पर ध्यान देना चाहिए ?
कागज़ मुड़ातुड़ा तथा मैला नहीं होना चाहिए । उस पर स्याही

फैलनी नहिं चाहिए । पत्र पानेवाले का पता सावधानी से लिखना चाहिए ।

३. पत्र में पता कैसे लिखना चाहिए ?

पते में सबसे पहले पत्र पानेवाले का नाम, फिर मकान नं, फिर गली और मुहल्ला, असके बाद नगर का नाम और जिले या प्रदेश का नाम लिखना चाहिए । अंत में 'पिन कोड' अवश्य लिखना चाहिए ।

४. इस गद्यांश केलिए उचित शीर्षक दीजिए ।

'पत्र - लेखन'

३

ज्ञानेन्द्रियाँ पांच हैं । आंख, कान, नाक, जीभ और त्वचा (चमड़ी) । ज्ञानेन्द्रियां उन इन्द्रियों को कहते हैं जिनके द्वारा हम तरह –तरह का ज्ञान प्राप्त करते हैं । आंखों से हमें चीज़ों के रंग और रुप का पता चलता है । कानों से हम आवाज़ों को सुनते हैं । नाक से हमें चीज़ों की गन्ध का पता चलता है । जीभ से खाने की चीज़ों के स्वाद का पता लगता है । जीभ एक काम और भी करती है - यह काम है बोलना । वास्तव में जीभ ज्ञानेन्द्रिय भी है और कर्मेन्द्रिय भी । ज्ञानेन्द्रिय के रुप में वह हमें चीज़ों के स्वाद के बारे में बताती है और कर्मेन्द्रिय के रुप में बोलने का काम करती है । जो इन्द्रियाँ काम करती है, उन्हें कर्मेन्द्रियाँ कहते हैं । जैसे - जीभ बोलने का काम करती है । हाथ चीज़ों को पकड़ने का काम करते है । पाँव चलने का काम करते हैं । इसी तरह मल और मूत्र का त्याग करनेवाली इन्द्रियाँ भी कर्मेन्द्रियाँ हैं। कर्मेन्द्रियाँ भी पाँच ही है । पाँचवीं ज्ञानेन्द्रिय है त्वचा । यह हमारे सारे शरीर में फैली हुई है । इससे हमें पता चलता है कि कौन - सी

चीज़ ठण्डी - गर्म या कोमल - खुरदरी है । इससे दबाव और चुभन का पता भी लगता है ।

१. ज्ञानेन्द्रियों से क्या तात्पर्य है ?
२. जीभ क्या क्या काम करती है ?
३. कर्मेन्द्रियों से क्या अभिप्राय है ?
४. त्वचा क्या काम करती है ?
५. इस गद्यांश केलिए उपयुक्त शीर्षक दीजिए ।

४.

1904 के २ अक्तुबर को जन्मे लाल बहादूर शास्त्री के बारे में संभवत : कोई भी नहीं जानता था कि यह नाटा बालक एक दिन देश के हितों पर जीवन उत्सर्ग करनेवाला होगा । शास्त्रीजी ने सत्रह वर्ष की आयु में राजनीति में प्रवेश किया । महात्मा गाँधीजी के आह्वान पर उन्होंने अपनी पढ़ाई छोड दी थी और असहयोग आन्दोलन में कूद गए थे । 1925 में ही उनका परिचय देश के सर्वोच्च नेता लाला लज़पतराय से हूआ । उनके सान्निध्य में रहकर शास्त्रीजी ने दलितों की सेवा की और किसानों, मज़दूरों का संगठन बनाया । इसके साथ - साथ उन्होंने खादी और चरखे का भी प्रचार किया । 1928 में लाठी चार्ज के कारण लालाजी के स्वर्ग सिधार जाने के बाद शाश्त्रीजी राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन के सान्निध्य में आए । वे शास्त्रीजी के प्रथम राजनीतिक गुरु थे। शास्त्रीजी में कठोर परिश्रम, लगन और सद्‌व्यवहार की भावना थी। उन्होंने एक बार कहा था कि हम रहें या न रहें, लेकिन यह झण्डा रहना चाहिए और देश रहना चाहिए । मुझे विश्वास है कि यह झण्डा रहेगा, हम और आप रहें या न रहें, लेकिन भारत का सिर ऊँचा होगा। भारत दुनिया के देशों में एक बड़ा देश होगा ।

१. शास्त्री जी के चरित्र में कौन - कौन सी विशेषताएँ थी ?
२. शास्त्री जी असहयोग आन्दोलन में कैसे आए ?
३. लाला लाजपतराय के सान्निध्य में रहकर शास्त्री जी ने देश और समाज की क्या सेवाएँ की ?
४. भारत के भविष्य के बारे में शास्त्री जी का क्या विचार था ?
५. प्रस्तुत गद्यांश केलिए उचित शीर्षक लिखिए ।

५

हिन्दी इस देश को जोड़नेवाली भाषा रही है । इस भाषा को अपनाने केलिए तथा इसे पारस्परिक आदान - प्रदान और सम्पर्क की भाषा बनाने केलिए अनेक ऐसे महानुभावों और मनीषियों ने प्रेरणा दी जिनकी यह अपनी मातृभाषा न थी । स्वतंत्रता आन्दोलन के दिनों सेनानियों ने हिन्दी के माध्यम से ही अपनी भावनाएँ देश के कोने - कोने तक पहूँचाने का प्रयास किया जो हमारी भावनात्मक एकता का सबसे बड़ा प्रमाण है । केशवचन्द्र सेन का नाम लें या दयानन्द सरस्वती का, महात्मा गाँधी की याद करें या लोकमान्य तिलक की, काका कालेलकर और विनोबा भावे की विशाल दृष्टि देखें, सभी में हिन्दी के प्रति अनुराग और इस भाषा को जन-जन की वाणि बनाने की उत्कट अभिलाषा विद्यमान थी। अनेक ऐसे संत, समाज - सुधारक, साहित्यकार, विद्वान और मनीषी हुए हैं जिन्होंने हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के उन्नयन और विकास केलिए कार्य किया। हमारी भाषाएँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर की सहज वाहिका शक्ति के रूप में महत्वपूर्ण योगदान देती आई है । हिन्दी का विकास भी इन सभी भारतीय भाषाओं के विकास पर निर्भर है । यदि भारतीय भाषाएँ आगे बढेंगी तो उससे हिन्दी के पोषण और विकास का मार्ग प्रशस्त होगा ।

१. हिन्दी का महत्व क्या है ?
२. हमारी भावनात्मक एकता का प्रमाण क्या है ?
३. हिन्दी को जन - जन की वाणी बनाने की अभिलाषा किन किन में थी ?
४. भारतीय भाषाओं के विकास से क्या लाभ है ?
५. प्रस्तुत परिच्छेद केलिए उचित शीर्षक लिखिए ।

६

संस्कृति ऐसी चीज़ है जिसे लक्षणों से तो हम जान सकते हैं, किन्तु, उसकी परिभाषा नहीं दे सकते । कुछ अंशों में वह सभ्यता से भिन्न गुण है । अंग्रोज़ी में कहावत है कि सभ्यता वह है जो हमारे पास है, संस्कृति वह गुण है जो हममें व्याप्त है । मोटर, महल, सड़क, हवाई जहाज़, पोशक और अच्छा मकान ये तथा इनके समान सारी अन्य स्थूल वस्तुएँ, संस्कृति नहीं, सभ्यता के सामान है । प्राचीन भारत में ऋषिगण जंगलों में रहते थे और जंगलों में वे कोठे और महल बनाकर नहीं रहते थे । फूस की झोंपडियों में वास करना, जंगल के जीवों से दोस्ती और प्यार करना, किसी भी मोटे काम को अपने हाथ से करने में हिचकिचाहट नहीं दिखाना, पत्तों में खाना और मिट्ठी के बर्तनों में रसोई पकाना, यही उनकी ज़िंदगी थी । और ये लक्षण आज की यूरोपीय परिभाषा के अनुसार सभ्यता के लक्षण नहीं माने जाते हैं । फिर भी वे ऋषिगण संस्कृत ही नहीं थे, बल्कि, वे हमारी जाति की संस्कृति का निर्माण करते थे ।

१. इस अवतरण के लिए उचित शीर्षक का निर्देश कीजिए ।
२. सभ्यता और संस्कृति में क्या उन्तर है ?

३. हमारे ऋषिगण कैसा जीवन बिताते थे ?
४. यूरोपीय परिभाषा के अनुसार सभ्यता के क्या - क्या सामान होते हैं ?

७

विज्ञान का दुरुपयोग सत्ता और शक्ति मोह में हुआ है । विज्ञान मानवता केलिए अभिशाप बना तो उसके उत्तरदायी हैं राजनीतिज्ञ । सन १९५० के नोबल पुरस्कार विजेता और विश्व के महान दाशीनिक बरट्रेन्ड रसल का यह मत है कि मनुष्य अपनी कलुषता में पवित्र को भी अपवित्र कर रहा है । जीवनदायिनी शक्ति को मनुष्य ही जीवननाशिनी बना रहा है । हिरोशिमा और नागसाकी इसी के प्रमाण हैं ।

१. उचित शीर्षक दीजिए ।
२. बरट्रेन्ड रसल का परिचय दो तीन वाक्यों में दीजिए ।
३. क्या, विज्ञान विनाशकारी है ?
४. हिरोशिमा और नगासाकी किसके प्रमाण है ?
५. विज्ञान का दुरुपयोग कौन करते हैं ? क्यों ?

८

सर्वोदय का सीधा और सरल अर्थ है सबका उदय - भला । आधुनिक युग में सर्वोदय के मन्त्रदाता राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी है । मानव - मात्र के उत्थान केलिए उन्होंने अनेक सूत्रों का निर्माण किया । गाँधीजी के मूलभूत सिद्धांतों का नाम ही सर्वोदय है । गाँधीजी को सर्वोदय की भावना अफ्रीका में मिली । उन्होंने आत्मकथा में लिखा है "मैं नैटाल केलिए खाना हूआ । मिस्टर पोलक स्टेशन पर मुझे पहुँचाने केलिए आए और रस्किन की पुस्तक (अन टू दिन लस्ट) मेरे हाथ में

देकर बोले" यह पुस्तक पढ़ने लायक है । मेरे जीवन में यदि किसी पुस्तक ने तत्काल महत्वपूर्ण रचनात्मक परिवर्तन कर डाला तो वह यही पुस्तक ....मेरा यह विश्वास है कि जो चीज़ मेरे अन्तर में बसी हुई थी उसका स्पष्ट प्रतिबिंब मैंने रस्किन के इस ग्रन्थ में देखा ।

१. उचित शीर्षक दीजिए ।
२. सर्वोदय का अर्थ क्या है ?
३. आज हम सर्वोदय से क्या समझते हैं ?
४. गाँधीजी को सर्वोदय की भावना कहाँ मिली ?
५. किस पुस्तक नें गाँधीजी को सबसे अधिक प्रभावित किया ?
इस पुस्तक के लेखक कौन है ?
६. यह पुस्तक गाँधीजी को कहाँ किससे प्राप्त हुई ?

९

बीसवीं शताब्दी में हिन्दी साहित्य की बहुमुखी उन्नति हूई । इस शताब्दी के आरंभ में ही काशी नागरी प्रचारिणी सभा के उद्योग से प्रयाग के इन्डियन प्रेस से 'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हूआ। सन १९०३ ई. से इस पत्रिका के संपादन का भार आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने ग्रहण किया । इस पत्रिका द्वारा द्विवेदीजी ने हिन्दी गघ को व्यवस्थित बनाने का बहुत अच्छा प्रयत्न किया । उन्होंने नये ढंग के लेख लिखने केलिए लेखकों को उद्‌बुद्ध किया ।

१. उचित शीर्षक दीज़िए ।
२. 'सरस्वती' पत्रिका का प्रकाशन कब और कहाँ से हूआ ?
३. १९०३ में 'सरस्वती' के संपादक कौन बने ?
४. हिन्दी गद्य को व्यवस्थित बनाने का प्रयल करनेवाले एक पंडित का

नाम बताइये ।

५. 'सरस्वती' ने हिन्दी की क्या सेवा की ?

१०

प्रेमचन्द का जन्म बनारस के पास ही एक गाँव में एक निर्धन परिवार में हुआ था । मैट्रिक पास करते - करते उनकी आर्थिक स्थिति यहाँ तक पहूँच गयी थी कि अपना निर्वाह वे पुरानी पुस्तक बेचकर भी नहीं कर सकते थे । उन्होंने स्कूल में मास्टरी कर ली थी । महात्मा गाँधी की पुकार पर उन्होंने सरकारी नौकरी छोड दी और जीवन की अंतिम घडियों तक संघर्ष का जीवन बिताया । वे दरिद्रता में जन्मे, दरिद्रता में पले और दरिद्रता से ही जूझते - जुझते समाप्त हो गये । फिर भी वे अपने जीवन काल में समस्त उत्तरी भारत के सर्वश्रेष्ठ कथाकार बन गए थे ।

१. उचित शीर्षक दीजिये :

२. प्रेमचन्द कौन थे?

३. प्रेमचन्द का जन्म कहाँ हुआ ?

४. मैट्रिक पास करके प्रेमचन्द ने स्कूल में मास्टरी क्यों कर ली?

५. स्कूल में मास्टर की नौकरी प्रेमचन्द ने क्यों छोड दी ?

११

सब धर्मों का लक्ष्य प्रेमधर्म है । सभी नीतियों का उद्देश्य प्रेमनीति पर पहुँचना है । प्रेम धर्मों से परे है, नीतियों से परे है, परंतु सब धर्म, सब नीतियाँ प्रेम के अन्तर्भूत है । वह धर्म धर्म नहीं ; जिसमें प्रेम न हो।

वह नीति नीति नहीं जिसमें प्रेम न हो। प्रेम व्यापक है और धर्म तथा नीति व्याप्य । इनके बिना वह रह सकता है ; परन्तु उसके बिना ये नहीं रह सकते। सम्पूर्ण नीतियों का ज्ञान हो; परन्तु प्रेमनीति का ज्ञान न हो तो वह ज्ञान किसी का नहीं । प्रेमनीति भगवान की नीति है, उनके सब अपने सबके साथ उनका प्रेम है और जो उनके आश्रित हैं; उनके साथ तो विशेष प्रेम है । आश्रित - वत्सलता भगवान की नीति है और वह प्रेम से भरी हुई है । भगवान के भक्त इस बात को जानते हैं और सर्वदा उसीके अनुकूल व्यवहार करते हैं ।

१. सब धर्मो और नीतियों का उद्देश्य क्या है ?

२. "इनके बिना वह रह सकता है"। किनके बिना क्या ?

३. 'उसके बिना ये नहीं रह सकते' । किसके बिना कौन ?

४. कौन - सा ज्ञान व्यर्थ है ?

५. भगवान की नीति का स्वरूप क्या है ?

६. "भगवान के भक्त इस बात को जानते है" । कौन - सी बात ?

७. इस अवतरण केलिए उचित शीर्षक का निर्देश कीजिए ।

निबन्ध

पर्यावरण और मनुष्य

हमारे चारों ओर की भूमि, हवा और पानी ही हमारा पर्यावरण है । इस पर्यावरण पर केवल मनुष्य का नहीं; सभी जीवों का अधिकार है । प्रकृति का हर जीव यानी पेड - पौधे, प्राणी, कीड़े - मकोडे, पक्षी आदि भी प्रकृति के महत्वपूर्ण अंग हैं । प्रकृति में सभी जीव - जातियों का ताल - मेल ज़रूरी है । पौधे और प्रणियों को जो थोडी - सी क्षति पहूँचती है उसका प्रभाव सृष्टि के समस्त कार्य - कलापों पर पड़ता है । मानव भी जीव - जातियों में एक है । वह अपने को सबसे विकसित और सभ्य समझता है क्योकि उसमें सोचने - विचारने की शक्ति है । लेकिन पर्यावरण केलिए सबसे बडा खतरा आज मनुष्य ही है । वह अपनी सुख - सुविधाओं केलिए अन्य जीवों का नाश करता है । बीसवीं सदी के मानव द्वारा पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है । उसका संतुलन डगमगाने लगा है । प्राकृतिक पर्यावरण अप्राकृतिक होता जा रहा है । विकास के नाम पर पर्यावरण की स्वच्छता और पवित्रता को वह क्षति पहुँचा रहा है । इसका परिणाम कितना भयानक हो सकता है ? इसका संकेत हमें चेरणोबिल (रूस) और भोपाल (भारत) की दुर्घटनाओं से मिलता है ।

विज्ञान ने हमें अनेक फ़ायदे पहूँचाए हैं । साथ ही अनेक नुकसान भी । बीसवीं सदी में सभ्य मानव ने पर्यावरण के प्रति बहुत छेड़छाड़ की है । आबादी बढ रही है । ज़रूरतें बढ़ रही है । सुख - सुविधाओं की लालसा बढ़ रही है । मुनुष्य मनमानी कर रहा है । दूरदर्शिता से काम लेना उसने नहीं सीखा । मकान बनाने, खेती करने, इंधन प्राप्त करने तथा पैसे बनाने केलिए पेड - पौधों और जंगलों का

सफ़ाया हो रहा है । सडकें और कारखाने बनाने केलिए प्रकृति का विनाश किया जाता है । सारी गंदगियाँ और बेकार पदार्थ नदियों और समुद्रों में डाल दिये जाते हैं । घरों के अंदर और बाहर बाग - बगीचों और खेतों में ज़हरीले जीवनाशी रसायन छिड़कते हैं । मोटर गाडियों से निकलनेवाले धूएँ में कार्बन मोनाक्सयिड नाम की ज़हरिली हानिकारक वस्तु मिली रहती है । इस तरह विज्ञान और टेकनॉलजी की प्रगति के साथ पर्यावरण का प्रदूषण भी बढता रहता है । जंगलों के कम होने से पेड - पौधे और विभिन्न जीव - जातियाँ कम होती जा रही हैं । इसका प्रभाव आब - हवा पर पडता है । गरमी बढ जाती है, कभी सूख होता है, कभी बाढ़ होती है । Acid rain के कारण जो विनाश हूआ उसकी खबर हमने सुनी है । Oxone layer (ओज़ोन की परत) की भारी क्षति हो रही है ।

कीटनाशी रसायनों के छिड़काव से वायु, भूमि, नदियों और समुद्रों का प्रदुषण हो रहा है । DDT (डी.डी.टी) का विश्वव्यापी प्रयोग हो रहा है । इसके विरुद्ध विवेकी व्यक्तियों ने आवाज़ उठायी है ।

रिएक्टरों, प्रयोगशालाओं, अस्पतालों और फैक्टरियों के अवशिष्ट से जनमार्ग प्रदूषित हो रहा है । सिंचाई और पन - बिजली (Hydro - electric) परियोजनाओं के प्रभाव से घास, पेड-पौधों और प्राणियों का भारी विनाश होता है ।

पर्यावरण की सुरक्षा के उपाय

इस भूमि का कल्याण चाहनेवाला हर व्यक्ति आज पर्यावरण की सुरक्षा का महत्व समझता है । पर्यावरण की सुरक्षा के लिए अनेक राष्ट्रीय और अन्तराष्ट्रीय प्रयास किये जा रहे हैं । हर देश में पर्यावरण

के लिए अलग मंत्रालय और विभाग की व्यवस्था है । संयुक्त राष्ट्र में भी इस विषय की बहस हूई । प्रतिवर्ष एक दिन पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है । भारत में वनमहोत्सव का उद्देश्य भी पर्यावरण की सुरक्षा है । जर्मनी में ग्रीन पार्टी (Green Party) ने पर्यावरण की सुरक्षा को घोषण पत्र में मुख्य मुद्दा बनाया है ।

भारत सरकार ने १९७४ में पानी के प्रदूषण पर नियंत्रण का नियम, १९८१ में हवा के प्रदूषण पर नियंत्रण का नियम और १९८६ में पर्यावरण संरक्षण नियम लागू किये हैं ।

विशेषज्ञों का यह मत है कि प्रदूषण बढता रहे तो ताज़ी हवा और शुद्ध पानी मिलना भी मुश्किल हो जाएगा । पर्यावरण का विनाश करनेवाला विकास खतरनाक है । गाँवों और नगरों के लोगों को भूमि, जल, पेड़ - पौधों और जीव - जातियों की सुरक्षा का ख्याल रखना चाहिए । हिमालय की बस्ती की स्त्रियों ने पेडों की रक्षा के लिए अपनी जान की बाज़ी लगाकर जो 'चिपकों आंदोलन' चलाया वह प्रकृति - संरक्षण का उज्जवल उदाहरण है ।

पर्यावरण की सुरक्षा में ही मानव - जाति का कल्याण है । हम प्रकृति से प्रेम करें और उसका खयाल रखें तो वह भी हमारा खयाल रखेगी । हम प्रकृति पर अत्याचार करें तो प्रतिक्रिया अत्यंत भयानक हो सकती है ।

भारत की भावात्मक एकता

भावात्मक एकता एक ऐसा विचार है जो यह इंगित करता है कि एक राष्ट्र अथवा देश में रहनेवाले आपस में सद्भावना रखते हैं और मिलजुलकर देश की उन्नति, सुरक्षा एवं कल्याण के लिए काम करते हैं। वे आपसी भेद - भावना को भूलकर एकता के सूत्र में बाँधे जाते हैं । ऐसे लोगों में देश प्रेम का स्तर ऊँचा होता है । किन्तु आजकल हमारे देश - वासियों में एकता की यह भावना विलुप्त हो रही है और देश में विघटनवादी शक्तियाँ प्रबल होती जा रहीं हैं । भारत के प्रत्येक नागरिक का यह धर्म होता है कि वह इन शक्तियों को पराजितकर देश में एकता स्थापित करने का प्रयत्न करें ।

भारत एक विशाल देश है । यहाँ पर अनेक घर्म, जाति, संस्कृति एवं भाषा के लोग रहते हैं । डा. राजेन्द्र प्रसाद ने ठीक ही कहा था कि हमारे देश की इसी विविधता को देखकर किसी भी विदेशी को यह भ्रम होने लगता है कि भारत एक देश नहीं, बल्कि, अनेक देशों का समूह है। यहाँ पर हिन्दू, मुस्लिम, सिख एवं ईसाई रहते हैं. । इन सबके आचार - विचार, रहन - सहन, वेश - भूषा, यहाँ तक कि खान - पान भी भिन्न - भिन्न होते हैं. । यहाँ पर अनेक जातियाँ हैं, अनेक प्रांत हैं; अनेक भाषाएँ हैं और अनेक बोलियाँ हैं । यहाँ धार्मिक एवं सांस्कृतिक भिन्नता ही नहीं; बलिक भोगोलिक भिन्नता भी हैं । इन विभिन्नताओं के कारण कभी - कभी विघटनकारी शक्तियों का सर उठाना सहज - सा प्रतीत होता है । किन्तु प्राचीन - काल से हमारा यही प्रयत्न रहा है कि इन-विभिन्नताओं में एकता की स्थापना करें धार्मिक - सहिष्णुता हमारी संस्कृति का प्रधान अंग रही है और हमने सभी धर्मों के विकास के लिए

समान अवसर दिये । हमने किसी धर्म या जाति को कभी भी घृणा की दृष्टि से नहीं देखा । फिर भी खेद की बात है कि धर्म के नाम पर भारत का विभाजन हो गया । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद प्रांतीयता एवं भाषा का सवाल उठाया गया और भाषा के नाम पर नये प्रांतों की सृष्टि हूई, जैसे आन्ध्र, गुजरात, हरियाना आदि । अब एक ओर 'खालिस्तान' के नारे लगाये जा रहे हैं तो दूसरी ओर राम - जन्म - भूमि एवं बाबरी मस्जिद के विवाद चलाये जा रहे हैं । कुछ नेता इन प्रश्नों को उठाकर अपना उल्लू सीधा करने का प्रयत्न कर रहे हैं । सभी अपने - अपने वाद पर डटे हुये हैं । किसी को भी देश की एकता एवं अखंडता को सुरक्षित रखने का विचार नहीं है ।

राष्ट्रभाषा हिन्दी भावात्मक एकता बढाने का अच्छा साधन है । अन्तर प्रांतीय एवं अन्तर - जातीय विवाह भी भावात्मक एकता को बढावा देते हैं । हमें एक दूसरे के धर्म एवं धार्मिक संस्थानों का आदर करना चाहिए । हमारे आपसी मत - भेद जो भी हों, हमें अपने राष्ट्र के हित को कभी नहीं भूलना चाहिए । देश का कल्याण देश की एकता में ही है ।

विज्ञान - वरदान या अभिशाप

बीसवीं शताब्दी को हम विज्ञान का युग मान सकते है । हमारी आधुनिक सभ्यता विज्ञान की ही रचना है । आधुनिक मनुष्य गर्व करता है कि प्रकृति उसकी दासी बन गयी हैं और पञ्चभूत उसके अनुचर । कुछ वर्ष पहले हम जिन्हें असम्भव समझते थे वे संभव हो चुके हैं । विज्ञान ने मनुष्य को चन्द्र लोक तक पहूँचा दिया । चिकित्सा के क्षेत्र में विज्ञान की देन अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं । जो रोग मृत्यु के अनिवार्य कारण समझे जाते थे उनका इलाज संभव हो गया है । एक्सरे, स्कानिंग (X-ray, Scanning) आदि की सहायता से मनुष्य के शरीर के अन्दर के समस्त अवयवों का निरीक्षण किया जा सकता है । जो अंग बेकाम हो गये हैं उनको निकालकर नये अंग रखे जाते हैं । इसी को transplantation कहते हैं । मनुष्य थोडे क्षणों में सारी पृथ्वी की परिक्रमा कर सकता है । दूर - दूर की घटनाएँ और दृश्य वह घर में बैठकर एक छोटी - सी पेटी के स्क्रीन पर देख सकता है । वह पृथ्वी के किसी भी कोने में और अन्तरिक्ष में भी अपना सन्देश एक क्षण के अन्दर पहुँचा सकता है । उसने उपग्रहों का निर्माण करके उन्हें अन्तरिक्ष में छोडा है। इन उपग्रहों से उसे अनेक संकेत और सुचनाएँ मिलती हैं जिनकी सहायता से वह वर्षा, भूकंप आदि का पूर्वानुमान कर सकता है । किसी भी जगह कोई खेल चले तो वह दूरदर्शन की सहायता से देख सकता है । आज अन्तराष्ट्रीय प्रतियोगिताएँ चलती हैं । कुछ दिन बाद शायद

अंतर्ग्रहीय (Interplanatory) प्रतियोगिताएँ भी चलने लगेंगी । कम्प्यूटर विज्ञान की आधुनिकतम देन है । वह मनुष्य के मस्तिष्क की तरह सभी काम करने लगा है ।

विज्ञान ने देश - विदेश की सीमाओं को नष्ट कर डाला है । हज़ारों मील दूर रहनेवाला व्यक्ति भी आज हमारा पडोसी बन गया है। क्यूबा के एक व्यक्ति का दुःख हमारा भी दुःख बन गया है । हम चाहें तो दुनिया के किसी भी कोने में तडपनेवाले लोगों की मदद कर सकते हैं । अत : विज्ञान मानवता केलिए वरदान ही है ।

विज्ञान की याद आते ही हमें हिरोशिमा और नागसाकी की भी याद आती है । युद्ध में काम आनेवाली अनेकानेक अत्यन्त विनाशकारी वस्तुएँ भी विज्ञान की ही देन हैं । अणुबम, हैड्रजन बम, मेसैल (प्रक्षोरास्त्र), रॉकट, रासायनिक युद्ध की सामग्रियाँ आदि कितनी कितनी वस्तुएँ मानवता के अस्तित्व को ही खतरा पहुँचा रहीं हैं ? किसी ने इसे 'Push button' सभ्यता कहा । एक मूर्ख शासक या अधिकारी बटन दबाकर एक क्षण में सारी दुनिया का नाश कर सकता है । हाल ही में जो खाड़ी युद्ध हुआ उसमें लाखों लोग चालीस दिन के अन्दर मारे गये। लाखों करोडों रूपये खर्च हुए। भविष्य में यदि कोई महायुद्ध हो तो सारी सृष्टि ही मिट सकती हैं।

मनुष्य विज्ञान की सहायता से हज़ारों लोगों को मृत्यु के मुँह से बचा लेता हैं। अगले क्षण लाखों को युद्ध में मार डालते हैं। यह कैसी सभ्यता है? क्या यही संस्कृति है?

हम हाथों से सुन्दर कविता लिखते हैं, बढिया चित्र खींचते हैं, वीणा की तंत्रियाँ बजाते हैं, प्यासे को पानी पिलाते हैं। उन्हीं हाथों से हम

दूसरों का गला घोंट भी सकते हैं, रिश्वत भी ले सकते हैं और मार पीट भी सकते हैं। जिन पैरों से चलते हैं और नाचते हैं उन्हीं पैरों से किसी को लात भी मार सकते हैं। क्या; इसमें हाथों और पैरों का दोष है ? मनुष्य का विवेक और अविवेक ही किसी वस्तु के गुण और दोष का निर्णय करता है। विज्ञान विवेकी मनुष्यों के हाथों में वरदान होता है तो अविवेकी, निरंकुश और स्वार्थी व्यक्तियों के हाथों में मानवता केलिए अभिशाप भी होता है।

---

४. राजभाषा हिन्दी

भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है । उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में ही भारत के सांस्कृतिक नेताओं ने देश की एकता केलिए एक भाषा की आवश्यकता पर बल दिया । वे हिन्दी को अखिल भारतीय भाषा मानने लगो थे । उनमें राजाराम मोहन राय, केशवचन्द्र सेन, स्वामी दयानन्द सरस्वती आदि अहिन्दी भाषियों के नाम उल्लेखनीय हैं । आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने पूरे भारत को अपनी बात सुनाने केलिए हिन्दी सीखकर उसमें भाषण दिया और लेख लिखे ।

बीसवीं शती के आरम्भ में गाँधी का ध्यान इस ओर गया । उन्होंने स्पष्ट लिखा कि सारे हिन्दुस्तान केलिए अखिल देशीय भाषा हिन्दी होनी चाहिए । अंग्रेज़ी भारत की राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती । किसी भाषा के राष्टभाषा बनने केलिए कुछ बातें आवश्यक है १) सरकारी कर्मचारियों केलिए वह भाषा सरल होनी चाहिए २) उस भाषा के माध्यम से पूरे भारत में धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक विचार विनिमय संभव हो ३) भारत के काफ़ी लोग उसका प्रयोग करें ४) राष्ट्र केलिए वह भाषा सरल हो । हिन्दी में ही ये सारे गुण विद्यमान हैं । इसलिए वही भारत की राष्ट्र-भाषा होने योग्य है ।

गाँधीजी ने राष्ट्र-भाषा हिन्दी के प्रचार को स्वतन्त्रता आन्दोलन का महत्वपूर्ण पहलू माना । दक्षिण के अहिन्दी प्रांतों में हिन्दी का प्रचार करने केलिए उन्होनें दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना की। उनके साथ काम करनेवाने नेताओं में राजाजी, के.एम. मुशी, आर.आर. दिवाकर आदि अहिन्दी भाषी मुख्य थे ।

राष्ट्रभाषा की कल्पना समग्र देश की सांस्कृतिक चेतना और भाषायी एकता का स्पष्ट प्रमाण है । स्वतन्त्रता के पहले हमारे नेताओं ने यह विश्वास प्रकट किया कि स्वतन्त्र भारत की अपनी राष्ट्रपताका और राष्ट्रगान की तरह राष्ट्रभाषा भी होगी ।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद अहिन्दी प्रदेशों के कुछ लोगों ने यह सन्देह प्रकट किया कि हिन्दी के राष्ट्रभाषा होने से प्रांतीय भाषाओं को खतरा होगा । इस आशंका को दूर करने केलिए यह स्पष्ट किया गया कि राज्यों में प्रांतीय भाषाओं में ही सरकार और जनता का कामकाज चलता रहेगा । राष्ट्र में जितनी भी भाषाएँ हैं वे सब राष्ट्र-भाषाएँ हैं । राष्ट्र-भाषा की कल्पना का प्रयोजन इतना ही है की अखिल भारतीय स्तर पर हिन्दी भाषा का प्रयोग हो । 'राष्ट्रभाषा' शब्द भ्रम पैदा कर सकता है, यही सोचकर हिन्दी को राजभाषा के रूप में ग्रहण किया गया।

भारतीय संविधान सोलह भाषाओं को राष्ट्र-भाषाएँ मानता है । हिन्दी को राजभाषा कहा गया है । संविधान में कहीं भी हिन्दी को राष्ट्र - भाषा नहीं कहा गया । हिन्दी या तो राजभाषा है या संघ भाषा। जो भाषा सारे संघ (union) केलिए व्यवहृत हो वहीं संघ भाषा (language of the union) है । शेष भाषाएँ राज्य भाषाएँ है । उनका प्रयोग केवल राज्यों में होता है । राज्य भाषाएँ अपने अपने राज्य में राजभाषा का काम करेंगी । अंग्रेज़ी आज जो काम कर रही है वही काम हिन्दी को करना पडेगा ।

संविधान में स्पष्ट किया गया कि १५ वर्षो के बाद केन्द्रीय सरकार के सारे कार्य राजभाषा हिन्दी में ही होंगे । दक्षिण के कुछ

व्यक्तियों और राजनीतिक दलों के विरोध के कारण यह संभव न हुआ। १९६५ में संविधान में यह सशोधन पारित किया गया कि दक्षिण के राज्य जब तक राजभाषा हिन्दी में काम करने को राज़ी न हों तब तक हिन्दी के साथ सहभाषा के रूप में अंग्रेज़ी का भी प्रयोग होता रहेगा। आज की स्थिति यह है कि केन्द्र की दो राजभाषाएँ हैं - हिन्दी और अंग्रेज़ी।

१९६५ में अहिन्दी प्रदेशों की आशंकाओं को दूर करने केलिए जवाहरलाल नेहरु ने एक नये शब्द को जन्म दिया - सम्पर्क भाषा (link language)। उन्होंने कहा – भारत एक बहुभाषी विशाल राष्ट्र है। हमारी पारस्परिक मैत्री केलिए एक सम्पर्क भाषा की नितान्त आवश्यकता है। यह सम्पर्क भाषा हिन्दी ही हो सकती है।

आज केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों संविधान की घोषण के अनुसार राजभाषा के रूप में हिन्दी के प्रयोग की अनेक योजनाएँ बना रही हैं। आशा करें कि एक दिन ऐसा आएगा जब हिन्दी पूरे भारत की एक मात्र राजभाषा बनेगी।

५. विद्यार्थी और राजनीति

हमारा देश भारत विश्व का सबसे बड़ा जनतांत्रिक राष्ट्र है। संविधान में यह भी कहा गया है कि यह एक धर्म-निरपेक्ष (secular) राष्ट्र है। यहाँ सभी धर्मों के लोग अपने-अपने विश्वासों के अनुसार उपासना कर सकते हैं। शासन उनकी इस स्वतन्त्रता में हस्तक्षेप नहीं करेगा।

संविधान में समय - समय पर संशोधन लाए गए । एक संशोधन के अनुसार अठारह वर्ष की उम्र के सब स्त्री-पुरुषों को मताधिकार प्राप्त हो चुका है । हमारे स्कूलों और कालेजों में पढनेवाले अनेक विद्यार्थियों को आज मतदान का अधिकार प्राप्त है । मतदान का राजनीति से अभिन्न संबन्ध है । राजनीतिक गतिविधियों को समझे बिना एक विद्यार्थी चुनाव में अपने मताधिकार का उचित उपयोग कैसे करेगा ?

क्या, आज कोई क्षेत्र ऐसा है जो राजनीति के प्रभाव से अछूता रहता है ? धर्म का पवित्र क्षेत्र भी आज राजनीतिक नेताओं और कार्यकर्ताओं का अखाड़ा बन गया है । विद्यालयों से राजनीति को दूर रखने का अनुरोध विवेकी व्यक्ति किया करते थे । लेकिन आज हम क्या देख रहे हैं ? कुलपति, उपकुलपति, प्रधान अध्यापक, अध्यापक, विद्यालयों के संचालक, विद्यालयों की विभिन्न समितियों के सदस्य इनमें से प्रत्येक पर राजनीति का रंग लगा है ! स्वाभाविक रुप से विद्यार्थी भी राजनीतिक पार्टियों की कठपुतलियाँ बन गये हैं ।

विद्यार्थी शब्द का अर्थ है विद्या का अर्जन करनेवाला । कई विद्यार्थियों केलिए विद्या केवल राजनीतिक नेता बनने की विद्या है । वे विद्यालयों और विद्यार्थी - जीवन को राजनितिक नेता बनने का प्रशिक्षण केन्द्र मानते हैं । आज हर राजनीतिक पार्टी का विद्यार्थी विभाग भी होता है । छोटे- छोटे बच्चे भी किसी राजनीतिक पार्टी के विद्यार्थी विभाग के सदस्य होते हैं । पार्टी के नाम पर वे स्कूलों और कालेजों की युनियनों का चुनाव लड़ते है । आज विद्यालय राजनीतिक दाँव-पेंच, संघर्ष और लडाई के मैदान बन गये हैं ।

जनतंत्र में मतों की भिन्नता होती है । लेकिन यह भिन्नता संघर्ष

और लडाई का कारण नहीं बन सकती । सहिष्णुता जनतंत्र की जान है। जनतांत्रिक राष्ट्र की सुयोग्य नागरिक बनने का प्रयत्न और अभ्यास करना हर विद्यार्थी का कर्तव्य है । नागरिक के केवल अधिकार ही नहीं होते, उसके कर्तव्य भी होते हैं । आज के विद्यार्थी कर्तव्यों को भूल बैठे हैं । वे विवेक और अनुशासन को भूल गये हैं । वे राज - नीतिक दलों और नेताओं के निर्देशानुसार आंदोलन चलाते हैं, आपस में लडते हैं, गालियाँ देते हैं और देश की सार्वजनिक संपत्ति का नाश करते हैं ।

विद्यार्थी का प्रथम कर्तव्य विद्या पाना ही है । यह विद्या उसके भविष्य के निर्माण में और देश की प्रगति और विकास में सहायक होती है । अच्छा राजनीतिक बनने केलिए भी शिक्षा अनिवार्य है । राजनीति को अशिक्षितों का अडडा मत समझिये । एक साधारण मतदाता केलिए भी शिक्षा और उससे मिलनेवाला विवेक आवश्यक है । विद्यार्थी जीवन में अनेक विषयों के साथ राजनितिक गतिविधियों और सिद्धान्तों का हम अध्ययन कर सकते है । राजनीतिक कार्यों में सक्रिय भाग लेना अलग बात है । दल गत रजनीति विद्यालयों के पवित्र वातावरण को अवश्य ही प्रदूषित करेगी ।

विद्यालयों में युनियनों 'पार्लमेंटों और एसोसियेशनों की व्यवस्था है । इनका उद्देश्य जनतंत्र के मौलिक सिद्धांतों के प्रयोग का अभ्यास देना है । कितने दुर्भाग्य की बात है कि विद्यार्थी इन व्यवस्थाओं का दुरुपयोग करते हैं ।

विद्यार्थी-जीवन में हमें जनतांत्रिक धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र के नागरिकों के रूप में जीना सीखना चाहिए । धर्म, जाति, संप्रदाय आदि के नाम पर आपस में लड़ना छोडकर प्रेम, सहिष्णुता और उदारता के उदात्त

आदर्शों का पालन करना चाहिए । सांप्रदायिकता दलगत राजनीति, हिंसात्मकता आदि से दूर रहना विद्यार्थियों केलिए श्रेयस्कर है ।

६ साक्षरता और जनतंत्र

प्लोटो (Plato) ने कहा था कि ऐकाधिपत्य में एक शासक को अच्छी शिक्षा देना पर्याप्त है । किन्तु जनतन्त्र में हर नागरिक को ठीक तरह से शिक्षित करना आवश्यक है । जनतंत्र का अर्थ है लोगों का शासन । जनता के हाथों में ही अधिकार रहता है । जनता ही शासन केलिए अपने प्रतिनिधियों को चुनती है । एक निरक्षर या अशिक्षित जनता जनतन्त्र केलिए सबसे बड़ा खतरा होती है । एक निरक्षर व्यक्ति अपने अधिकारों और कर्तव्यों को समझ नहीं सकेगा । वह अपने मताधिकार का उपयोग भी ठीक तरह नहीं कर सकेगा ।

हमारे देश में प्रतिरक्षा के बाद सबसे अधिक रकम शिक्षा केलिए खर्च होती है । फिर भी जनसंख्या का साठ प्रतिशत (६०%) निरक्षर रहता है । उच्च शिक्षा तो केवल पाँच प्रतिशत को प्राप्त है । निरक्षरों में सबसे अधिक संख्या वयस्कों की होती है । उनमें भी स्त्रियाँ पुरुषों से ज्यादा हैं । वे अधिकार गरीब और बेरोज़गार होते हैं । औपचारिक शिक्षा उनकी पहुँच के बाहर होती है । सभी निरक्षरों को औपचारिक शिक्षा देने केलिए हमारे विद्यालय पर्याप्त नहीं है । अनौपचारिक शिक्षा ही निरक्षरता को दूर करने का एकमात्र उपाय है ।

एक देश की प्रगति दो बातों पर निर्भर रहती है - साक्षरता और आर्थिक विकास । केवल आर्थिक विकास से जनता के जीवन के स्वरूप

(quality) में विशेष अंतर नहीं आया है । एक देश के लोगो की शिक्षा का स्तर वहाँ की आर्थिक वृद्धि का सूचक होता है । (Literacy is the starting point of economic growth) इसलिए अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के साथ प्रौढों को साक्षर बनाने का प्रयास भी आवश्यक है ।

साक्षरता पढने और लिखने की क्षमता है । यह शिक्षा की केवल पहली सीढ़ी है । आज हमारे देश में शिक्षितों और निरक्षरों के बीच एक बड़ी खाई है । यही असंतोष, शत्रुता और सामाजिक और राजनीतिक संघर्षों का कारण होती है ।

देश का विकास और साक्षरता में घनिष्ठ संबन्ध है । सारा ज्ञान - विज्ञान आज लिखित और मुद्रित शब्दों के रूप में संचित है । साक्षर हूए बिना कोई उन्हें प्राप्त नहीं कर सकता । निरक्षर व्यक्ति को देश के वैज्ञानिक और तकनीकी विकास का पता कैसे चलेगा ? वह कैसे देश के सामाजिक और राजनीतिक विकास में भाग ले सकेगा ? निरक्षरता किसी भी देश केलिए एक ऐसा शाप है जो सामाजिक और आर्थिक प्रगति को रोकेगा ।

साक्षरता ज्ञान का प्रकाश देकर एक अच्छे भविष्य का द्वार खोल देती है । साक्षरता से लोग अपनी कमियों को समझने लगते हैं । निरक्षर व्यक्ति अपने पुराने विश्वासों और रूढियों से लिपटकर रहते है। वह यह सोचकर चुप बैठेगा कि बीमारी दैवी कोप से होती है । एक किसान थोडी - सी साक्षरता पाकर समझने लगता है कि अच्छी फ़सल पाने केलिए कौन-सा उर्वरक उपयोगी हैं ?

देश में निरक्षरता इतनी व्यापक है कि केवल सरकारी प्रयास इसे दूर करने केलिए पर्याप्त नहीं । केन्द्र सरकार ने इस समस्या को गंभीर

समझकर कई योजनाएँ बनायीं । शिक्षा राज्य सरकारों की अधिकार सीमा में आती है । इसलिए विभिन्न राज्यों में विभिन्न प्रकार से निरक्षरता निवारण के प्रयास चल रहे हैं । स्वयं सेवी संगठनों (voluntary organisations) ने साक्षरता अभियान में महत्वपूर्ण योगदान दिया है । सरकार को अनुदान आदि देकर उनकी मदद करनी चाहिए।

केरल में साक्षरता का अभियान सफलतापूर्वक संपन्न हुआ । इसमें स्वयंसेवी संगठनों, सामाजिक और राजनीतिक संस्थाओं, बुद्धिजीवियों, सरकारी कर्मचारियों और साधारण जनता का हार्दिक सहयोग प्राप्त हुआ । परिणाम स्वरुप केरल ने शत प्रतिशत साक्षर राज्य का गौरव प्राप्त किया । आशा करें कि केरल का यह नमूना भारत के अन्य राज्यों केलिए मार्ग-दर्शक बनेगा ।

७ दूरदर्शन

भारत के अधिकतर प्रदेशों में दुरदर्शन को शुरु हुए वहुत साल नहीं हुए हैं । इतने कम समय में ही वह अत्यन्त लोकप्रिय बन चुका है । वह हमारे जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है । वह हर घर का सबसे प्रभावगाली अंग बन गया है । हम सब उसके गुलाम । वही हमारी ज़िंदगी के कार्यक्रम और योजनाएँ बनाता है । वह हमें जगाता है, सुलाता है, बिठाता है, चलाता है, रुला‌ है, हँसाता है । कोई हमारे घर कब आए, हम किसी के घर क जाएँ, इनका निर्णय भी यही करता है । टी. वी. की छोटी-सी पेटी के सामने निर्निमेष बैठनेवालों में बच्चे, युवक, बूढे, स्त्री-पुरुष सभी होते हैं । इस नये अविष्कार ने रेडियो को पुरानी बस्तु बना ‌ । रेडियो से हम केवल सुन सकते थे।

दुरदर्शन से हम सुन भी सकते हैं देख भी सकते हैं ।

दूरदर्शन शिक्षा, मनोरंजन, विज्ञापन, प्रचार आदि का सशक्त माध्यम है । वह अनेक प्रकार के कार्यकम प्रसारित करता है । अंग्रेज़ी, हिन्दी और प्रादेशिक भाषाओं में समाचार तो होते ही हैं । शास्त्रीय संगीत, सुगम संगीत फिल्मी गीत नृत्य कवि-सम्मेलन, नाटक व्याख्यान, चर्चाएँ भेंटवार्ताएँ आदि कितने-कितने कार्यक्रम होते हैं ? खेल-प्रेमियों केलिए भी विशेष कार्यकम होते हैं । क्रिकेट प्रेमियों केलिए दूरदर्शन बहुत बडा अनुग्रह सिद्ध हो चुका है। बच्चों केलिए रोचक प्रोग्राम, महिलाओं केलिए रसोई बनाने की विधि,वेष-भूषा संबन्धी निर्दश आदि भी दुरदर्शन से दिए जाते हैं। स्वास्थ्य को सुधारने केलिए आवश्यक निर्देश देनेवाले कार्यक्रम बहुत उपयोगी हैं। विश्वविध्यालय अनुदान (UGC) के सहयोग से शिक्षा सम्बन्धी कार्यक्रम दुपहर और शाम को प्रस्तुत किये जाते हैं। देश के विभिन्न भागों में चलनेवाले महत्वपूर्ण सम्मेलनों की रिपोर्ट हमारे ज्ञान को बढाने केलिए पर्याप्त हैं।

दूरदर्शन समाज और राष्ट्र के सुधार में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है । लोगों में राष्ट्र-प्रेम की भावना जगाने तथा सामाजिक दायित्वों का बोध कराने केलिऐ भी अनेक कार्यकम दिखाए जाते हैं । पर्यावरण के प्रदूषण के बुरे परिणाम समझानेवाले कार्यक्रम विशेष उल्लेखनीय हैं । कुछ दिन पहले ‘How to keep a city clean’ शीर्षक से एक प्रोग्राम दिखाया गया । इसमें यह दिखाया गया था कि टोकियो नगर को कैसे साफ़ रखा जाता है । नशीली वस्तुओं का प्रयोग युवकों में बढ़ता रहता है । इसके हानिकारक प्रभाव और इससे बचने के मार्गों पर अनेक प्रोग्राम दिखाए गये हैं । दूरदर्शन विज्ञापन का बहुत सफल माध्यम है । बडी बडी कम्पनियाँ दूरदर्शन के द्वारा अपने माल

का विज्ञापन करती हैं और अपनी वस्तुओं का प्रचार बढ़ाती हैं ।

टेलिविज़न के प्रभाव से समाज में कुछ हानिकारक प्रवृत्तियाँ पैदा हूई हैं । मनुष्यों के परस्पर संपर्क में कमी होने लगी है । वहुत - से लोग दूरदर्शन की फिल्में और फिल्मी दृश्य ही अधिक पसन्द करते हैं। बच्चे तो खेल-कूद के, विशेषकर क्रिकेट के बडे प्रेमी हैं । वे घण्टों तक टी. वी. में खेल का सीधा प्रसारण देखते रहते हैं । विद्यार्थी अध्यापकों की आँखों बचाकर और अध्यापक विद्यार्थियों की आँख बचाकर टी. वी. देखते हैं । टी. वी. लडकों की पढाई में निश्चित रूप से बाधा डालता है। टी. वी. से मिलनेवाली जानकारी को पर्याप्त समझकर कई लोगों ने पुस्तकों और पत्रिकाएँ पढने की आदत भी छोडी है । हिंसावृत्ति और लैंगिकता को बढानेवाले दृश्य बच्चों और युवकों पर बहुत बुरा प्रभाव डालते हैं । टी.वी. घर के सभी सदस्यों के उपयोग की वस्तु है । अतएव अधिकारियों को इस पर बात का ध्यान रखना चाहिए कि दूरदर्शन के कार्यक्रम सुरुचिपूर्ण हों ।

८ पुस्तकालय

किसी ने एक शिक्षा शास्त्री से पूछा - "अगर किसी ने आपसे एक शिक्षा - संस्था की स्थापना करने को कहा तो आप सबसे पहले क्या करेंगे ?" शिक्षा-शास्त्री ने तुरन्त उत्तर दिया - "मैं सबसे पहले एक पुस्तकालय का मकान बनाऊँगा और उसे पुस्तकों से भरूँगा । फिर यदि कोई रकम बचे तो क्लास रूम बगैरह की व्यवस्था करूँगा ।"

हम विद्या व शिक्षा पाने केलिए विद्यालय जाते हैं । वहाँ हमें शिक्षा देने केलिए अध्यापक होते हैं । ऐसी शिक्षा औपचारिक शिक्षा कहलाती है । लेकिन यह शिक्षा पूर्ण नहीं मानी जा सकती । शिक्षा पूर्ण होती है स्वाध्याय से। स्वाध्याय केलिए पुस्तकों की ज़रूरत होती हैं ।

ज्ञान पारावार की तरह अनन्त और असीम है । विषयों की संख्या में निरन्तर वृद्धि होती रहती है । नये नये ग्रन्थों की रचना होती रहती हैं । एक ही विषय पर अनेक लेखकों की रचनाएँ होती हैं । इस संसार में ऐसा कोई धनी व्यक्ति नहीं जो विविध विषयों पर लिखी हूई सभी पुस्तकों को खरीदकर पढ सकता है । आजकल किताबें बहुत महँगी हो गयी हैं । छोटी - छोटी पुस्तकों का दाम भी सौ रुपये से अधिक हो गया है । पुस्तकालयों का महत्व इस प्रसंग में बहुत बढ गया है । पुस्तकालय वह जगह है जहाँ विविध विषयों की अनेक रचनाएँ व्यवस्थित ढंग से रखी गयी हैं । हम अपनी रुचि, इच्छा और आवश्यकता के अनुसार कोई भी पुस्तक ले सकते हैं और पढ सकते हैं।

दुनिया के बडे बडे नगरों में विश्वप्रसिद्ध अनेक पुस्तकालय हैं जहाँ लाखों पुस्तकें संचित हैं । लन्दन, मोस्को, कलकत्ता आदि नगरों के पुस्तकालय बहुत पुराने और प्रसिद्ध है । हर विश्वविधालय में विद्यार्थियों और अध्यापकों केलिए पुस्तकालय होते हैं । वे काफ़ी बडे भी होते हैं । हर कालेज और हर स्कूल में भी पुस्तकालय अनिवार्य माने जाते हैं । हर पंचायत में भी पुस्तकालय होते हैं । केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों पुस्तकालयों केलिए अनुदान दिया करती है ।

कुछ ग्रन्थ ऐसे होते हैं जिनका मुल्य हज़ारों रुपये होता है । कुछ ग्रन्थ बहुत पुराने और हमारेलिए अप्राप्य होते हैं । ऐसी पुस्तकें पुस्तकालयों

में ही सुरक्षित है । ऐसे ग्रन्थ जिनका उपयोग हम पुस्तकालयों में बैठकर ही कर सकते हैं, सन्दर्भ-ग्रन्थ (reference books) कहलाते हैं ।

कुछ पुस्तकालयों के साथ वाचनालय भी होते हैं । वहाँ बैठकर हम दैनिक पत्र, साप्ताहिक तथा मासिक पत्र पढ सकते हैं ।

निरक्षर जनता किसी भी देश केलिए बहुत बड़ा अभिशाप है । भारत में जनता को साक्षर बनाने का प्रयास ज़ोर-शोर से चल रहा है। इस प्रयास में पुस्तकालय बडा योगदान दे सकते हैं । साक्षरता प्राप्त लोगों की पढने लिखने की रुचि को बनाए रखने में पुस्तकालय बहुत उपयोगी काम कर सकते हैं ।

किसी ने बिलकुल सही कहा है कि एक देश के पुस्तकालयों की संख्या से उसकी सांस्कृतिक उन्नति का अनुमान कर सकते हैं ।

पुस्तकालय समाज के लोगों की भलाई केलिए होते हैं । लेकिन यह बडी लज्जा की बात है कि हम पुस्तकालयों से पुस्तकें लेकर उनके मुख्य पृष्ठों और चित्रों को फाड़कर निकाल लेते हैं । यह सार्वजनिक हित की सुविधाओं का दुरुपयोग है न ? नागरिकों के रूप में हमारा कर्तव्य है कि हम अधिकाधिक पुस्तकालयों की व्यवस्था करें और उनसे लाभ उठायें ।

अनुवाद

1.

Here is a 'Persian story'. A great king was sad one day. He himself didn't know it reason. He consulted his astrologers. One of them told him, You will be happy if you wear the shirt of a very happy man. The king's men searched for a happyman everywhere. But no such man could be found. At last they saw a labourer. He was absolutely happy. But alas ! He didn't have even a shirt to put on.

2

An old farmer called his three idle sons around him on his death-bed and said, "My sons, a great treasure lies hid in the estate which I am about to leave to you". The oldman gasped. "Where is it hid? exclaimed the sons in a breath". " I am about to tell you". said the old man. "You will have to dig for it". But his breath failed him before he could impart the secret, and he died. Forthwith his sons set to work upon the long-neglected fields. They discovered no treasure, but they learnt to work. When the fields were sown, and the harvests came, the yield was big. Then it was that they discovered the treasure concealed in the estate.

3

No wonder all his pupils loved Socrates. But he made some dangerous enemies by his strange ways of teaching and asking questions. Some of the rulers in Athens didn't like people to be encouraged to ask too many questions. For they feared they would begin asking questions about what their rulers were doing. So they accused Socrates of teaching young men wicked things and leading them to throw off their religion. This was false, for, in fact, Socrates was a very religious man. At last his enemies had him arrested, and he was condemned to death.

4

Gandhiji did not believe in mere precepts. He set examples for others. For instance he very much liked manual work. He never considered any work small or menial. He thought that manual work was noble and dignified. He expected that educated people would work. He used to weave on the Charka. He himself would card cotton and weave yarn. Thus he practised his ideas.

(Precept - धर्मोपदेश । dignified - शानदार । to cad - साफ़ करना)

5

Once two women quarrelled for a child. Both of them went to a judge for justice. They had no witness. After thinking for a while the judge ordered, "make two pieces of this child and give one to each of them." Hearing this one woman kept quiet. But the other began to weep and cried. "don't cut my child into pieces'. Then the judge became convinced that she indeed was the real mother. He gave the child to her. The other woman was punished.

(Witness - साक्षी, गवाह । to convince - विश्वास होना । Punish - दण्ड देना ।)

6

One pleasant morning in spring, a merry shephered boy was tending sheep in a valley. He was singing and dancing with joy. The king who was hunting in the neighbourhood saw him and asked him how it was that he was so merry. The boy did not recognize the king. He said " why should I not be merry since our king is not richer than I am?"

" Really ! exclaimed the king." Tell me then all things you possess".

"The sun we see everyday in the beautiful sky shines for me as brightly as for the king. Mountains and valleys display the same beautiful

green, the same lovely flowers bloom for me as well as for him. I have enough to eat every day. Can you tell me what more the king has !" said the boy

(Shepherd - गडेरिया, मेषपालक । to tend - देख भाल करना । Valley - घाटी। display - प्रदर्शित करना । bloom - विकसित होना ।)

7

Gopalakrishna Gokhale was one of the great men born in our country. He was not only a great patriot and a politician but also a great social worker. To see him at work was as much a joy as an education. He never wasted a minute. His private relations and friendships were all for public good. All his talks had reference only to the good of the country.

(Patriot - देशप्रेमी । Social worker - समाज सेवक । reference - संबंध ।)

8

One day a girl was going from her house carrying a basket full of eggs to be sold in the city. She said to herself, "I will get a lot of money by selling these eggs. I shall buy good cloths with that money and wear them. Every one will admire my beauty and praise me". Just then a motor car came from behind. So she jumped away from the road. The basket fell down and all the eggs got broken.

(basket - टोकरी, डलिया । admire - प्रशंसा करना, मुग्ध होना ।)

9

The Ganges is the most important river in India. There are many holy places on the ganges. Haridwar and Banaras are two of the holiest places among them. At Haridwar temples rise on the right bank of the river, and stone steps go down to the water. Hunderds of pilgrims come to Haridwar to bathe in the ganges. At one place time fishes swim about in

the water. They are fed by pilgrims. On the hill rising a hundred feet above the water, stands Banaras, the holy city of the Hindus. It has been the home of Hinduism for hundreds of years and perhaps the oldest city in India.

(Pilgrim - तीर्थयात्री ।)

10

We celebrate several festivals in our country every year. Dasara and Deepavali are two important Hindu festivals. Muslims celebrate Ramzan and Christians celebrate the Christmas. Deepavali is a festival of lights. The word Deepavali means a row or lights. Children love the festival verymuch. They get up early in the morning on Deepavali day. After a bath they put on new clothes and light crackers. Then they go out and play with their friends. Mother makes sweets and the family enjoys a fine feast. In the evening girls put lights in front of their houses. Everyhouse looks bright with the lights. The fireworks light up the dark night.

11

The citizen has both rights and duties. Some people think only of their rights. they forget their duties on account of their selfishness. But if we don't perform our duties, how can we claim our rights? India gives much to us and expects much from us in return. Everyone has a right to have enough food to eat, if he earns it by his work. Here the state has a great responsibility. It must try to find food for all people to be sold at prices which they can afford to pay. The government should therefore try to improve food production by helping the farmers in many ways.

12

Why do young boys fight? You sometimes fight with your brother, or with the other boys here, don't you? why? you fight over a toy. Perhaps

another boy has taken your ball, or your book, and therefore you fight. Grown-up people fight for exactly the same reason, only their toys are position wealth and power. If you want power and I also want power, we fight and that is why nations go to war. It is as simple as that, only philosophers, politicians and the so called religious people complicate it.

don't you - ठीक है न। Grown up - उम्र में बड़े । position - पद । power - सत्ता, अधिकार । Philosopher - दार्शनिक । politician - राजनीतिज्ञ । so called religious people - तथाकथित धार्मिक व्यक्ति । complicate - जटिल बनाना।

13

A man was walking along a road one day, followed by his sheep. A thief want after him, cut the rope of the sheep, and took it away. When he realized what had happened, the man ran all over the place looking for his animal. Presently he came to a well, where he saw a man apparently in despair.

Although the man did not know it, he was the very same thief.

He asked him what he was doing. The thief said. "I have dropped a purse into this well. It contains five hundred silver coins. If you will jump in and get it back for me, I will give you a hundred silver pieces."

The man thought "When one door shuts, a hundred way open. This chance is worth ten times the sheep which I have lost."

He stripped himself and plunged into the well.

And the thief carried off his clothes.

Presently - शीघ्र । man apparently in despair - जो उदास दिखाई देता था । Purse - बटुआ Silver coins - चाँदी के सिक्के । Silver pieces - चाँदी के सिक्के । Stripped - कपड़े उतार डाले । Plunged - कूद पडा ।

14

A neighbour found Mulla Nasrudin down on his knees looking for something.

"What have you lost Mulla ?"

"My Key," said Nasrudin.

After a few minutes of searching, the neighbour said, "Where did you drop it?"

"At home."

"Then why are you looking here ?"

"There is more light here."

Nasrudin, ferrying a pedant across a river, said something ungrammatical to him.

Have you never studied grammar?' asked the scholar.

"No"

"Then half of your life has been wasted."

A few minutes later Nasrudin turned to the passenger."

"Have you ever learned how to swim."

"No. Why?"

"Then all your life is wasted - we are sinking."

neighbour - पडोसी । down on his knees - घुटनों पर झुककर । to look for - ढूँढना । a pedant - अपने पांडित्य पर गर्व करनेवाला व्यक्ति । ferring - नाव पर ले जाना। wasted - बेकार हो गया ।

15

You know that we had a great man amongst us. He was called Mahatma Gandhi. But we used to call him affectionately Bapuji. He was very wise, but he did not show off his wisdom. He was simple and child-like in many way and he loved children. He was a friend of everybody and every body, peasant or worker, poor man or rich man came to him and found a friendly welcome. He was a friend not only to all the people of India, but also to all the people in the rest of the world. He taught us not to hate any body, not to quarrel, but to play with one another and to co-operate in the service of our country. He taught us also not to be afraid of anything and to face the world cheerfully and with laughter.

केरल विश्वविद्यालय प्रकाशन